CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वि. १३५८
२०३१

VMP45

प्राचीन शिलालेख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः श्री शान्तिनाथाय

२५४९

प्राचीन शिलालेख

श्री १०८ दि० जैन अतिशय क्षेत्र अहारजी

टीकमगढ़ (म० प्र०)

संग्राहक :

पं० गोविन्ददास जी जैन कोठिया, न्यायतीर्थ

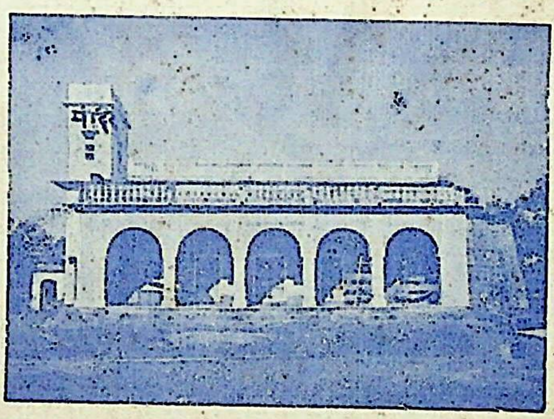

प्रकाशक :

श्रीमान् सेठ हीरालाल, दीपचंद, अनंदीलालजी जैन

हटा (टीकमगढ़) म० प्र०

द्वितीयावृत्ति १०००

वि० सं० २०१६

मूल्य ५० नये पैसे

मुद्रक : त्रिलोकीनाथ मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या ३:१३५६ प्राप्ति-संख्या २४८५
ग्रन्थ-कार्ड
श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान
ग्रन्थागार
नरिया, वाराणसी-५
ग्रन्थ नाम प्राचीन शिलालेख
लेखक पं० गोविन्द दास जी जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४६१
६.१३५६

प्राक्कथन

जैन संस्कृतिके प्राचीन इतिहासको जानने के लिये मूर्तियोंके तल भागमें अङ्कित लेखोंका भी अपना विशिष्ट स्थान है। क्योंकि उनमें मूर्तिकी प्रतिष्ठा करानेवाले स्त्री-पुरुषों के वंशोंका, काल का तथा राजवंश आदि का भी यथायोग्य उल्लेख रहता है, जिनसे राजवंशीय इतिहास के साथ ही साथ सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण में सहायता मिलती है।

प्रतिष्ठाओं की धूम—

प्रस्तुत पुस्तिका में अहार (टीकमगढ़) क्षेत्र की मूर्तियों और ताम्रयन्त्रोंमें अङ्कित शिलालेखोंका सङ्कलन किया गया है जिनकी संख्या ११७ है। उनको देखनेसे प्रकट होता है कि बारहवीं और तेरहवीं शताब्दीमें विम्ब-प्रतिष्ठाओंका बहुत जोर था। प्रति वर्ष ही नहीं, किन्तु वर्षमें दो बार भी बिम्ब-प्रतिष्ठा होती थी। ये प्रतिष्ठाएँ उसी स्थानपर हुई जहाँ जिन-बिम्ब विराजमान हैं, या अन्यत्र इसके जाननेका कोई उपाय नहीं है क्योंकि एक-दो मूर्ति-लेखोंमें ही स्थानका निर्देश किया गया है। फिर भी उस समय की स्थिति और भावनाको देखते हुए यही प्रतीत होता है कि अधिकांश जिन-विम्बोंकी प्रतिष्ठा उसी स्थानपर हुई होगी, जहाँ वे विराजमान हैं।

शान्तिनाथ की मूर्ति का लेख –

अहार क्षेत्रकी शान्तिनाथ स्वामीकी १८ फीट ऊँची विशाल-काय प्रतिमाके पादमूलमें जो शिला-लेख अङ्कित है वह विस्तृत है। उससे प्रकट होता है कि वि० सं० १२३७ में इस मूर्ति की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिष्ठा हुई थी। उस समय स्थानका नाम मदनेशसागरपुर था। और परमर्द्धि देवविजयका राज्य था। इस मूर्तिकी प्रतिष्ठा श्रेष्ठि गल्हणके प्रपौत्र श्री रल्हण के पौत्र तथा पूर्णचन्दके पुत्र जाहड़ और उदयचन्दने कराई थी। इस लेखमें मूर्ति बनानेवाले का नाम भी दिया है। वल्हणके पुत्र महामति शास्त्रज्ञ पापटने इस मूर्तिका निर्माण किया था। मूर्ति वनानेवालेका नाम अङ्कित किया जाना उल्लेखनीय वात है।

साहित्यक प्रशस्ति–

इस मूर्तिका लेख साहित्यिक दृष्टिसे भी उल्लेखनीय है। रचना वहुत सुन्दर है। उक्त मूर्तिकी प्रतिष्ठाके समय ही एक दूसरी प्रतिष्ठित मूर्तिके पादतलमें अङ्कित शिला-लेखकी रचना तो और भी सरस और कवित्वपूर्ण है। प्रस्तुत पुस्तिकामें उसका नम्वर १६ है। प्रतिष्ठाता का नाम कमलदेव था और वह खण्डेवाल था, उसके सम्वन्धमें लिखा है—

'कमलानिवासवसतिः कमलवलाक्षः प्रसन्नमुखकमलः।
बुधकमलकमलबन्धुः विकलङ्कः कमलदेव इति।'

कितना सुन्दर पद्य है। ज्ञात होता है कि किसी अच्छे कवि के द्वारा इन प्रशस्ति-लेखों का निर्माण कराया गया है।

प्रतिष्ठाओंका कालक्रम–

सबसे प्राचीन मूर्ति संवत् ११२३ की है। उसके पश्चात् ११९९ की है। उसके पश्चात् प्रायः प्रति वर्षकी प्रतिष्ठित मूर्तियाँ उपलब्ध हैं। उनका काल-क्रम निम्न प्रकार है— १२००, १२०२, १२०३, १२०६, १२०७, १२०९, १२१०, १२११, १२१२, १२१३, १२१४, १२१६, १२१८, १२२३, १२२५, १२२८, १२३०, १२३७, १२८८, १३२०, १३३२। इसके वाद विच्छेद पड़ गया है। मालूम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धान्ताचार्य ... श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी द्वारा भेंट

होता है इस कालमें मदनेशपर नगर वैभवपूर्ण था और वहाँके लोग सम्पन्न तथा धर्म-प्रेमी थे।

स्त्री-पुरुषोंके नाम–

उक्त कालके मूर्ति-लेखोंसे उस समयके मनुष्योंके नामोंपर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है। पुरुषोंके गल्हण, रल्हण, जाहड़, गेल्हड़, सल्हड़, अल्ह, वाल्हू, मल्हण, वाहड़, देल्हण, कल्हण तथा स्त्रियोंके साल्ही, आल्ही जैसे नाम रखनेकी विशेष प्रथा थी। किन्तु इनके साथ ही पूर्णचन्द, कमलदेव, उदयचन्द, मङ्गलदेव, आमदेव, कामदेव, तथा जसमति, जशकरी जैसे नाम भी प्रचलित थे।

अन्वय–

मूर्ति-लेखोंमें अङ्कित कुछ अन्वय बड़े विचित्र हैं। लमेचु, खण्डेलवाल, गोलापूर्व, जैसवाल, पोरवाड़ तो प्रसिद्ध जातियाँ हैं। किन्तु माधवान्वय, महडितवाल, अवधपुर, कुटक, गर्गराट, गृहपति आदि जातियाँ ऐसी हैं जिनका नाम नहीं सुना जाता। मेड़तवाल वंशके लोग शायद मारबाड़के मेड़ता ग्रामके वासी होंगे। गृहपतिका बिगड़कर शायद गहोई हो गया है। हिन्दुओं में गहोई जाति पाई जाती है। पहले इसमें जैन भी होंगे।

एक ही मूर्ति-लेखमें दो विभिन्न जातियोंके व्यक्तियोंका भी निर्देश मिलता है जो बतलाता है कि उन लोगोंने मिलकर प्रतिष्ठा कराई थी।

कुन्दकुन्दान्वयकी परम्परा–

एक विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि मूर्ति-लेखोंमें जो 'कुन्दकुन्दावये सरस्वती गच्छे' आदि अङ्कित करनेकी प्रवृत्ति है, वह प्राचीन कालमें नहीं थी। ऐसा १३ वीं शताब्दीके शिला-लेखोंसे ज्ञात होता है। पुस्तिकामें अङ्कित १७ वीं शताब्दीके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखों में और उसके पश्चात् के लेखों में यह पाई जाती है। और उन्हींमें भट्टारकों का भी उल्लेख मिलता है। प्राचीन-शिलालेखों में भट्टारकोंका भी उल्लेख नहीं है। सम्भवतः उस समय भट्टारकी प्रथा का प्रवर्तन नहीं हुआ था।

अकबर का उल्लेख—

एक ताम्र-पत्रपर अङ्कित लेख (नं० ११४) में जिसकी प्रतिष्ठा उत्तरप्रदेश के फिरोजाबाद नगरमें हुई थी और जो १६४२ संवत् का है। मुगल बादशाह अकबर जलालुद्दीन का नाम (श्रीअबरज लाल दर्जं) अङ्कित है। उस समय भारतमें उसका राज्य था।

शिला-लेखों में अङ्कित विशिष्ट बातों की ओर ध्यान आकृष्ट करने के पश्चात् मैं इस संग्रह के संग्राहक को तथा प्रकाशक को धन्यवाद देता हूँ। यदि लेखों का सङ्कलन कालक्रमसे किया जाता तो बहुत अच्छा होता। लेखोंके साथ हिन्दीमें उसका अर्थ देनेसे सर्वसाधारणके लिये भी वे उपयोगी हो गये हैं। यद्यपि कहीं-कहीं भ्रमवश कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई हैं। फिर भी कार्य स्तुत्य है।

फाल्गुन
वी० नि० सं० २४८४

कैलाशचन्द्र शास्त्री
प्रधानाचार्य, श्री स्याद्वाद महाविद्यालय,
वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

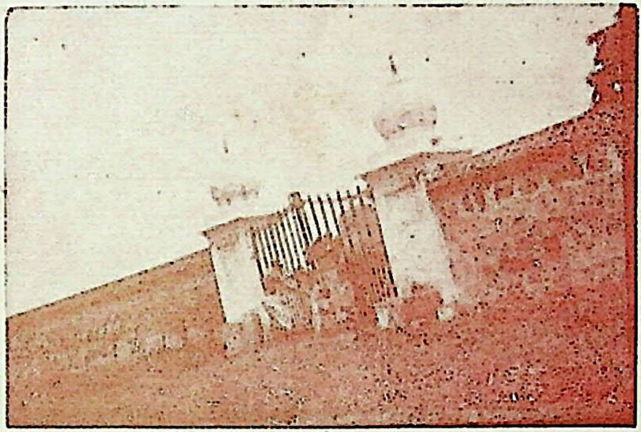

दक्षिण द्वार

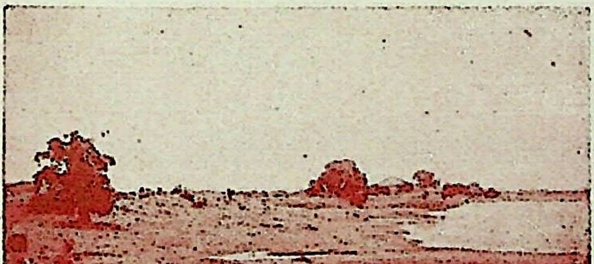

मदनसागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

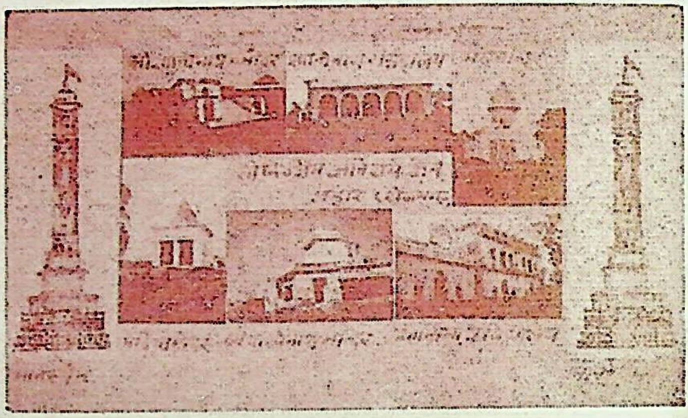

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र अहार

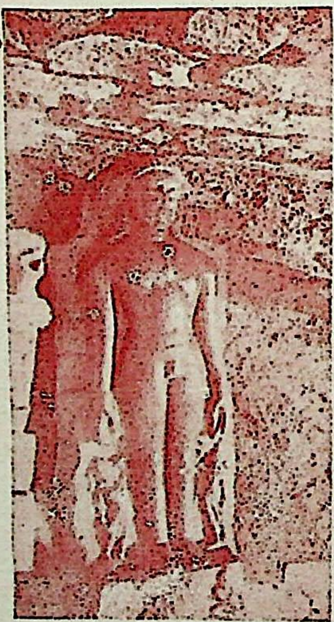

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पुरातन मूर्ति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन मूर्ति शिलालेख

प्रास्ताविक

सुदूरकाल में बुन्देलखण्ड की भव्य वसुन्धरा बुन्देलोंकी अमर गाथाओं से तो गौरवान्वित होती ही रही, साथ में जैन संस्कृति और उसके अमर साहित्य की संरक्षणी भी रही। यह मानते हैं कि बुन्देलखण्ड एक समय जैनियों का अच्छा और प्रधान केन्द्र रहा है, इसका प्रमाण अनेक उस प्राचीन जैनतीर्थ, विशाल जैन-मन्दिर, जिनबिम्बोंके शिलालेख और उन शिलालेखोंमें उल्लिखित जैनों की विभिन्न अनेक उपजातियां आदि हैं।

बुन्देलखण्ड में खजुराहा, देवगढ़, सीरोंन, चन्देरी, थूबौन, पवा, पपौरा, द्रोणगिरि, रेशिंदीगिरि, बाणपुर आदि अनेक प्राचीन पवित्र क्षेत्र हैं। इनमें कई क्षेत्र तो प्रकाशमें आ चुके हैं। और उनके शिलालेखादि भी प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु कई क्षेत्र अभी पूर्ण प्रकाश में नहीं आये और न उनके शिलालेख वगैरह ही प्रकाशमें आये हैं। अहारक्षेत्र भी ऐसे ही क्षेत्रों में से एक है। जिस प्रकार अनेक प्राचीन मूर्तियों तथा मन्दिरों के भग्नावशेष देवगढ़ आदि स्थानों में पाये जाते हैं—उसी तरह अहारमें भी वे यत्र-तत्र पाये जाते हैं। इन पर उत्कीर्ण शिला-लेखों से प्रतीत होता है कि श्रीअहार की प्राचीन बस्ती का नाम 'मदनेशसागरपुर' था। इसके तत्कालीन शासक श्रीमदनवर्म्म थे—जो चन्देलोंमें प्रमुख और प्रभावशाली एवं यशस्वी चन्देल नरेश थे। विक्रम की ग्यारहवीं-तेरहवीं सदी के शिलालेखों में जो अहारजी में विद्यमान हैं मदनेशसागरपुर का नाम स्पष्टतया आता है। श्रीअहार के पास जो विशाल सरोवर बना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ है वह आज भी 'मदनसागर' के नामसे विश्रुत है। इससे यह जान पड़ता है कि ग्यारहवीं सदीमें यहां चन्देलनरेश मदन-वर्म्मका शासन (राज्य) था और अहारका उस समय 'मदनेश-सागरपुर' नाम था।

यहाँकी मूर्तियोंके शिलालेखोंसे पता चलता है कि खण्डेल-वाल, जैसवाल, मेडवाल, लमेचू, पौरपाट, गृहपति, गोलापूर्व, गोलाराड, अवधपुरिया, गर्गराट आदि अनेक जातियोंका अस्तित्व था। इन सभी जातियोंकी प्रतिष्ठित मूर्तियाँ यहाँ विद्यमान हैं।

यहाँ वि० सं० ११२३ से लेकर वि० सं० १८६९ तक की प्राचीन मूर्तियाँ पाई जाती हैं। अतः ज्ञात होता है कि बीचकी एक-दो सदियोंको छोड़कर बराबर १२वीं सदीसे लेकर १९वीं सदी तक बिम्ब प्रतिष्ठाएँ यहाँ होती रहीं। मूल नायक भगवान् शान्तिनाथकी प्रतिबिम्बसे जो विक्रमकी तेरहवीं सदीमें प्रतिष्ठित हुई है, १०० वर्ष पहलेकी यहाँ प्रतिमाएं पाई जाती हैं।

यहाँ भट्टारकोंकी शताब्दियों तक गद्दियाँ रही हैं ऐसा शिला-लेखोंसे मालूम होता है। यहाँके तत्कालीन एक प्रभावपूर्ण अति-शयने तो अहारके नामको आज तक अमर रक्खा है। कहते हैं कि यहां एक धर्मात्मा व्यापारी (सम्भवतः जैनश्रेष्ठी प्राणाशाह) का राँगा, जो बहुत तादादमें था, चाँदी हो गया था। उसने अपने उस तमाम द्रव्यको चैत्य-चैत्यालय तथा धर्मायतनोंके निर्माणमें ही लगा दिया। तभीसे यहाँ धार्मिक मान्यताओंके साथ अनेक स्तूपोंके रूपमें और भी अनेक मन्दिर निर्माण कराये गये जिनकी निश्चित संख्या बताना असम्भव है।

खुदाई करनेपर यहाँपर उत्तरोत्तर बहुत तादादमें खण्डित मूर्तियाँ भूगर्भसे प्राप्त हो रही हैं। जिनमें अनेकोंकी आसनें शिला-लेखोंसे अङ्कित हैं। अनेकोंके आङ्गोंपाङ्ग खण्डित हो चुके हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्तियाँ अनेक वर्षों तक भूगर्भमें निहित रहीं फिर भी उनकी पॉलिश ज्योंकी त्यों चमकदार है।

मूर्तियोंके प्रतिष्ठा लेखोंसे पता चलता है कि उस समय संस्कृतका अच्छा प्रचार था। प्रशस्तियाँ प्राय: संस्कृतमें ही लिखी जाती थीं। लिपि चाहे प्राचीन हो या अर्वाचीन।

श्री अहारक्षेत्रमें जो शिलालेखयुक्त मूर्तियाँ खण्डित और अखण्डित रूपमें उपलब्ध हैं उन्हीं के शिलालेखोंका यह महत्त्व-पूर्ण संग्रह पाठकोंके सामने प्रस्तुत है। कई लेख घिसने तथा आसनोंके टूटनेसे पूरे-पूरे नहीं पढ़े जा सके हैं, उसके लिये लेखक क्षम्य है।

इसमें जहाँ संशोधन प्रतीत हो उसे विद्वज्जन मुझे सूचित करनेकी कृपा करेंगे। मैं उनका बड़ा आभारी होऊंगा। यदि इस संग्रहसे पाठकोंको थोड़ा भी लाभ पहुँचा तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

शिला-लेख (मूर्तिलेख)

मूर्ति देशी पाषाणसे निर्मित है। पॉलिश मटियाले रङ्गकी चमकदार है। करीब २२ फुटकी शिलापर १८ फुट ऊंची यह विशालकाय मूर्ति खड्गासन सुशोभित है। आसनके दोनों ओर दो यक्षिणियोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। जिनके अङ्ग वगैरह खण्डित हो चुके हैं। दोनों ओर दो इन्द्र खड़े हैं। मूर्तिका दाँया हाथ टूट गया था यह दूसरे पाषाणसे पुन: बनाया गया है। उसपर पॉलिश भी किया गया है परन्तु पहले पॉलिशसे नहीं मिल सका है। नासिका, पैरोंके अंगूठे आदि उपाङ्ग भी पुन: जोड़े गये हैं। आसन पर दोनों ओर दो हिरण खड़े हैं। उसके नीचे शिलालेख है जो करीब ४ इञ्च लम्बा और ६ इञ्च चौड़ा है। शिलालेख इस प्रकार है —

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर १

ॐ नमो वीतरागाय ।। गृहपतिवंशसरोरुह सहस्ररश्मि: सहस्रकूट य: । वाणपुरे व्यधितासीत् श्रीमानिह देवपाल इति ।। १ ।। श्रीरत्नपाल इति तत्तनयो वरेण्य: । पुण्यैक मूर्त्तिरभवद् वसुहाटिकायाम् । कीर्तिर्जगत्र-यपरिभ्रमणश्रमार्त्ता यस्य स्थिराजनि जिनायतनाच्छलेन ।।२।। एकस्ता-वदनूनबुद्धिनिधिना श्रीशान्ति चैत्यालयो-दृष्ट्यानन्दपुरे पर: परनरानन्द-प्रद: श्रीमता । येन श्रीमदनेशसागरपुरे तज्जन्मनो निर्म्मिमे । सोऽयं श्रेष्ठिवरिष्टगल्हण इति श्रीरल्हणाख्यादभूत् ।। ३ ।। तस्मादजायत कुलाम्बर पूर्णचन्द्र: श्रीजाहडस्तदनुजोदयचन्द्रनामा । एक: परोपकृति-हैतुकृतावतारो धर्मात्मक: पुनरमोघसुदानसार: ।।४।। ताभ्यामशेषदुरितौ-घशमैकहेतुं-निर्म्मापितं भुवनभूषणभूतमेतत् श्रीशान्ति चैत्यमिति नित्य-सुखप्रदानात् । मुक्तिश्रियो वदनवीक्षणलोलुपाभ्याम् ।।५।। सम्वत् १२३७ मार्गसुदी ३ शक्रे श्रीमत्परमर्द्धिदेवविजयाराज्ये । चन्दभास्करसमुद्रतारका यादवदत्र जनचित्तहारका: । धर्मकारिकृतशुद्धकीर्त्तनं तावदेवजयतात् सुकीर्त्तनम् ।। वल्हणस्य सुत: श्रीमान् रूपकारोमहामति: पापटोवास्तु-शास्त्रज्ञस्तेन बिम्बंसुर्निर्मितम् ।

भावार्थ:—वीतरागके लिये नमस्कार (है) जिन्होंने बानपुर में एक सहस्रकूट चैत्यालय बनवाया, वे गृहपतिवंशरूपी कमलों को प्रफुल्लित करनेके लिये सूर्यके समान श्रीमान् देवपाल यहाँ (इस नगर में) हुए ।

श्लोक २—उनके रत्नपाल नामक एक श्रेष्ठ पुत्र हुए जो वसुहाटिकामें पवित्रताकी एक (प्रधान) मूर्ति थे । जिसकी कीर्ति तीनों लोकोंमें परिभ्रमण करनेके श्रमसे थककर इस जिनायतन के बहाने ठहर गई ।

श्लोक ३—श्रीरल्हणके श्रेष्ठियोंमें प्रमुख, श्रीमान् गल्हणका जन्म हुआ जो समग्रबुद्धिके निधान थे और जिन्होंने नन्दपुरमें श्री-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

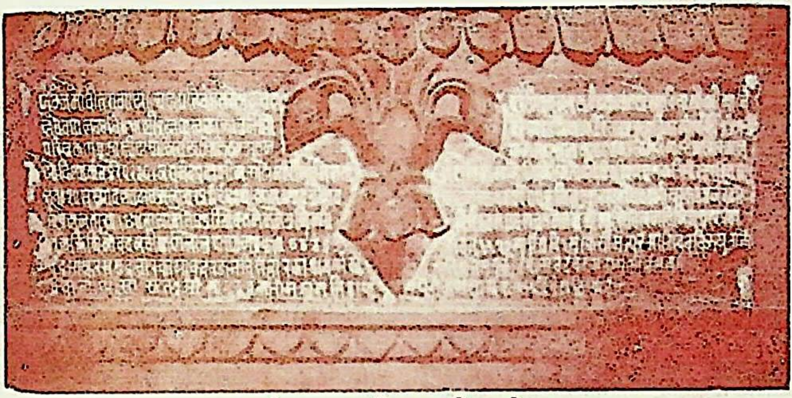

शान्तिनाथ मूर्ति का शिलालेख

पुरातन मूर्तियाँ झालर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

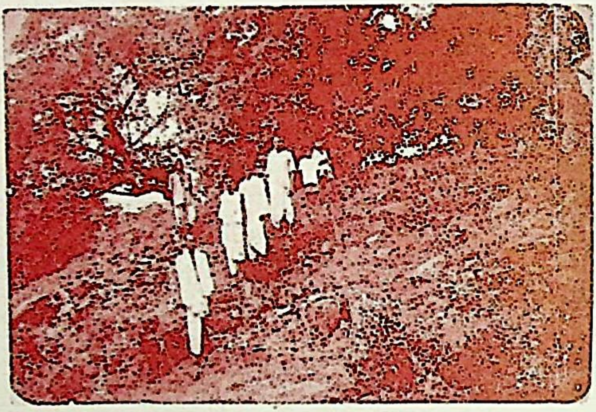

पहाड़ी मंदिर

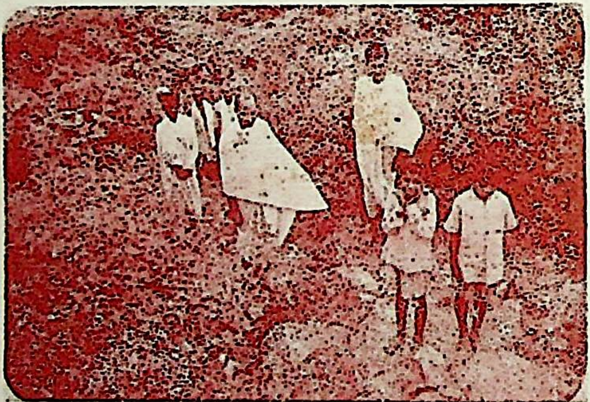

पहाड़ी मंदिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिनाथ भगवान् का एक चैत्यालय बनवाया था; और इतर सभी लोगोंको आनन्द देनेवाला दूसरा चैत्यालय अपने जन्मस्थान श्रीमदनेशसागरपुरमें बनवाया था।

श्लोक ४—उनसे कुलरूपी आकाशके लिए पूर्णचन्द्रके समान श्रीजाहड़ उत्पन्न हुए। उनके छोटे भाई उदयचन्द्र थे। उनका जन्म प्रधानतासे परोपकारके लिये हुआ था। वे धर्मात्मा और अमोघदानी थे।

श्लोक ५—मुक्तिरूपी लक्ष्मीके मुखावलोकनके लिये लोलुप उन दोनों भाइयोंने समस्त पापोंके क्षयका कारण, पृथ्वीका भूषणस्वरूप और शाश्वतिक महान् आनन्दको देनेवाला श्री शान्तिनाथ भगवान् का यह प्रतिबिम्ब निर्मापित किया।

संवत १२३७ अगहन सुदी ३, शुक्रवार, श्रीमान् परमर्द्धिदेवके विजय राज्यमें—

श्लोक ६—इस लोकमें जब तक चन्द्रमा, सूर्य, समुद्र और तारागण मनुष्योंके चित्तोंका हरण करते हैं तब तक धर्म्मकारी का रचा हुआ सुकीर्त्तिमय यह सुकीर्त्तन विजयी रहे।

श्लोक ७—वाल्हणके पुत्र महामतिशाली मूर्त्तिनिर्माता और वास्तुशास्त्रके ज्ञाता श्रीमान् पापट हुए, उन्होंने इस प्रतिबिम्बकी सुन्दर रचना की।

नोट—इस लेखकी प्रथम पंक्तिमें बाणपुरके जिस सहस्रकूट चैत्यालयका उल्लेख आया है वह वहां अब भी विद्यमान हैं। यद्यपि उसकी भी अधिकाँश मूर्त्तियाँ खण्डित हो चुकी हैं तथापि वे सभी मूर्त्तियाँ और चैत्यालय उत्कृष्ट शिल्पकलाके उत्तम आदर्श हैं।

दूसरे श्लोकमें जो "बसुहाटिकायां" पद आया है इससे विदित होता है कि यह किसी प्रसिद्ध नगरीका नाम रहा होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस श्लोक में वर्णित नन्दपुर भी इसी नगर के करीव होना चाहिए जो उस समय प्रसिद्ध था।

तथा "मदनेशसागरपुर" जो पद आया है उससे ज्ञात होता है कि वह सम्भवतः इसी स्थान—अहार—का नाम रहा होगा। यहाँ के तालाव को आज भी 'मदनसागर' कहते हैं।

यह मूर्ति क़रीव १३ फुट की शिला पर करीव ११ फुट ऊँची खड्गासन है। मूर्ति के कुछ उपाङ्ग छिल गये हैं। नासिका, उपस्थ इन्द्रिय तथा पैरों के अँगूठे टूट गये हैं। वाँया हाथ पुनः जोड़ा गया है। शिलालेख का वह भाग टूट गया है। भाव को लेकर पूर्त्ति की है। चिह्न वकरे का है। पालिश मटियाले रङ्ग की है।

लेख नम्वर २

ॐ नमो वीतरागाय। वभूव रामा नयनभिरामा, श्रीरल्हणस्येह महेश्वरस्य। गंगेव गंगागत पंकसंगा, जड़ाशयानेव परं नवोढ़ा ॥१॥ गार्हस्थधर्मनितरां ग्रहणप्रवीणा, निरंतरप्रेमनिधानधात्री। पुत्रत्रयं मंगलकार्यसूता, येषां च कीर्त्तिरिव सत्वरधर्मवृत्तिः॥२॥तेषां गांगेयकल्पः प्रथम तनुभवः पुण्यमूर्त्तिः प्रसूतः। स्कन्दो भूतेशमेवागुणवतिरुदयादित्यनामापरस्य। ख्याता धर्मे कुमुदशशिलघुभ्रातृयुग्मे वियुक्ते, संसारासारतां······ ··हिबुद्धिः ॥३॥ वित्तानि विद्युदिव सत्वर गत्वराणि, राजीविनी जलसामनि व जीवतानि। तुल्यानि······गणस्यहियौवनानि······ ······॥४॥

भावार्थः—वीतराग के लिये नमस्कार हो। श्रीरल्हण के महेश्वर की तरह पापों से रहित नव विवाहित नयनों को प्यारी गङ्गा नाम की स्त्री हुई ॥१॥ जो हमेशा गृहस्थ-धर्म को ग्रहण करने में चतुर तथा हमेशा प्रेम की निधानभूत थी। उसने मङ्गल रूप तीन पुत्र पैदा किये। जिनकी कीर्त्ति के समान जल्दी धर्म में प्रवृत्ति हुई ॥२॥ उन तीनों पुत्रों में से पुण्य की मूर्ति के समान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महादेव को कार्त्तिकेय के मानिन्द पहला पुत्र पैदा हुआ। उसने अपने छोटे दो भाइयों के वियोग होने से तमाम संसार की असारता को जाना। तथा दान और धर्म में है बुद्धि जिसकी ऐसे उसने धन को बिजली के समान जल्दी नाशवान् जाना। तथा जीवन को जल-बुदबुदे के समान माना। तथा बादलों की चञ्चलता के समान यौवन को माना। फिर तमाम धन को निज हित में लगा कर ही धन्य माना ॥४॥

यह करीब ६ इञ्च का मटियाले पाषाण का एक भग्नावशेष मात्र है। इसकी पालिश बहुत कुछ शान्तिनाथ की मूर्त्ति से मिलती है। चिह्न की जगह कुछ अस्पष्ट निशान है जो अच्छी तरह नहीं देखा जा सकता। शिलालेख का बहुत भाग टूट गया है। कुछ शब्द पढ़े गये जो नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

लेख नम्बर ३

सं० १२३७ मार्ग सुदी ३ शुक्रे साहु श्रीपाल सुत साहु गेल्हण ·· ··· ··। बाकी हिस्सा नहीं है।

यह मूर्त्ति मन्दिर नं० १ के प्राँगण की दीवार में खचित है। मूर्त्ति का शिर धड़ से अलग है, परन्तु चूना से पुनः जोड़ा गया है। मूर्त्ति करीब १॥ फुट पद्मासन है। पाषाण काला है। चिह्न को देखकर पुष्पदन्त की मालूम होती है। कुछ शिलालेख का हिस्सा दीवार में बन्द है, अतः पूरा नहीं पढ़ा जा सका।

लेख नम्बर ४

सं० १२०९ वैशाख सुदी १३ श्रीमदनसागरपुरे मेडवालान्वये साहु कोकासुत साहु क्वारकम्प पडिमा कारपिता ॥

भावार्थ:—मेडवाल जातिभूषण साहु कोका तथा पुत्र क्वारकम्प ने सं० १२०९ के वैशाख सुदी १३ के दिन प्रतिमा बनवाई।

मूर्ति नं०४ की भाँति मंदिर नं०१ के प्रांगण में है, शिर धड़से अलग है, पुनः जोड़ा गया है। मूर्त्ति की हथेली मय अँगुलियों के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुत्र मातन उसकी वहिन आश्ही ये सं० १२०६ वैशाख सुदी १३ को विम्ब प्रतिष्ठा करा कर प्रति दिन प्रणाम करते हैं।

मूर्त्ति के दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं। कुछ हिस्से छिल गये हैं, जैसे—दाढ़ी-नासिका-अंगुली। बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। करीब ५ फुट अवगाहना को लिये हुए खड्गासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है। चिह्न वगैरह कुछ नहीं है। शिलालेख घिस गया है। कुछ हिस्सा पढ़ा जा सका, जो इस प्रकार है—

लेख नम्बर १०

स० १२०३ माघ सुदी १३ साहु जगचन्द्र पुत्र सखवन्त·· ···।

भावार्थ:—सं० १२०३ माघ सुदी १३ को साह जगचन्द्र और उनके पुत्र सुखवन्त आदि ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति भी मन्दिर नं० १ के चौके में चिनी है। शिर धड़ से अलग होने पर भी जोड़ा गया है। दोनों हाथों के पहुँचे छिल गये हैं। वैल का चिह्न है। करीब १॥ फुट की अवगाहना है, आसन पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ११

सं० १२०३ माघ सुदी १३ गोलापूर्वान्वये साहु भावदेव भार्या जसमती पुत्र लक्ष्मीवन प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थ:—गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले शाह भावदेव उनकी धर्मपत्नी जसमती पुत्र लक्ष्मी बनने १२०३ माघ सुदी १३ को प्रतिष्ठा कराकर सब प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

यह मूर्ति भी मन्दिर नं० १ के चौक में चिनी है। शिर धड़ से अलग होने पर पुनः जोड़ दिया गया है। चिह्न कुछ नहीं है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन काले पाषाण की है।

लेख नम्बर १२

सं० १२३७ मार्ग सुदी ३ शक्रे गोलाराडान्वये साहु श्रीदेवचन्द्र सुत दामर भार्या अपिली प्रणमन्ति नित्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—गोलाराड वंशोत्पन्न शाह श्रीदेवचन्द्र उनके पुत्र दामर उनकी पत्नी अपिली सं० १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को प्रतिष्ठा कराकर प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

यह मूर्ति भी मन्दिर नं० १ के चौक में विराजमान है। दोनों ओर इन्द्र खड़े हैं। सिर्फ नासिका छिल गई है। बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। चिह्न हिरण का है। करीब ३। फुट ऊँची खड्गासन है। काले पाषाण से निर्मित है।

लेख नम्बर १३

स० १२१६ माघसुदी १३ शुक्रे जैसवालान्वये साहु श्रीघण तद्भार्या सलसा तस्य पुत्र साहु आमदेव तथा कामदेव सुत लखमदेव तस्य ग्रेयेदेवचन्द्र—वाल्हू सांति—हाल प्रभृतयः प्रणमन्ति नित्यम्। मङ्गलं। महाश्रीः।

भावार्थः – जैसवाल वंश में पैदा होने वाले शाहघण उनकी पत्नी सलषा उसके पुत्र शाह आमदेव तथा कामदेव उसके पुत्र शाह लखमदेव उसके गृह में पैदा होने वाले देवचन्द्र, वालू-सांतिहालू प्रभृति ने सं० १२१६ माघ सुदी १३ शुक्रवार के दिन बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति भी मन्दिर नं० १ के चौक में शिर जोड़ कर चिन दी गई है। बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। चिह्न हाथी का है। २। फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। लेख का कुछ हिस्सा छिल गया है।

लेख नं० १४

············साहु श्रीमल्हण तस्य सुत वाकु तस्य सुत लाल तस्य भार्या नाधर तयोः सुत गाल्हराउ, आमदेव अजितं जिनं प्रणमन्ति नित्यम् सं० १२०३ माघ सुदी १३।

भावार्थः—शाह श्रीमल्हण उनके पुत्र वाकु उनके पुत्र लाल उनकी पत्नी नाधर उन दोनों के पुत्र दो—वाल्हराय, आमदेव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अजित जिनको प्रतिदिन प्रणाम करते हैं। सं० १२०३ माघ सुदी १३ को प्रतिष्ठा हुई।

यह मूर्ति भी मन्दिर नं०१ के चौक की दीवारमें खचित है। मूर्ति का शिर धड़ से अलग होने पर पुनः जोड़ दिया है। चिह्न की जगह एक कमल है। जो किसी कला का द्योतक है २। फुट पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर १५

सं० १२०६ आषाढ़ बदी ८ गुरौ जयसवालान्वये साहु श्रीवाहड़ तत्सतौ सोमपति मल्हणौ तथा साहु श्रीनमिचन्द्र तत्सुतौ माहिल—पंडित देल्हणौ तथा साहु श्रीरत तत्सुताः-सीद—भाव—कल्हणाः एते नित्यं प्रणमन्ति।

भावार्थः—जैसवाल वंश में पैदा हुए शाह श्रीवाहड़ उनके पुत्र दो-सोमपति और मल्हण। तथा शाह श्रीनमिचन्द्र उनके पुत्र दो—माहिल पंडित तथा देल्हण। तथा शाह श्रीरत उनके पुत्र तीन—सीद, भावु और कल्हण इन्होंने सं० १२०९ के आषाढ़ बदी ५ गुरुवारको प्रतिष्ठा कराई। ये सब सदा प्रणाम करते हैं।

यह मूर्त्ति भी मन्दिर नं० १ के चौक में शिर जोड़ कर चिन दी गई है। चिह्न शेर का है। २। फुट की ऊँची पद्मासन है। काला पाषाण है। वाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है।

लेख नम्बर १६

सं० १२३७ मार्ग सुदी ३ शुक्रे।

श्रीवीरदेव इत्यासीत्, खण्डेलान्वयभास्करः।
प्रतिद्यावार्यंतेयोभूत्तत्पुत्रो उपशमक्षमः॥
कमलानिवास वसतिः, कमलदलाक्षः प्रसन्नमुखकमलः।
बुधकमल-कमलबन्धुः विकलंकः कमलदेव इति॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

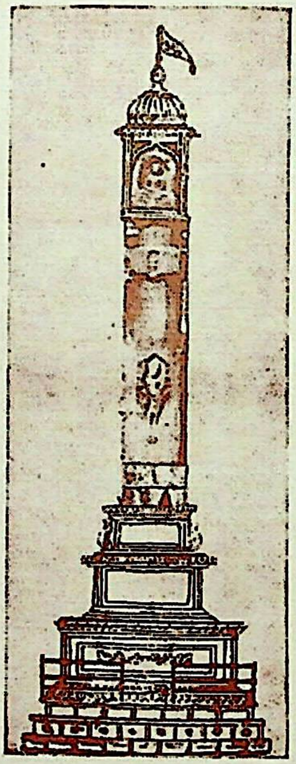

मान स्थंभ

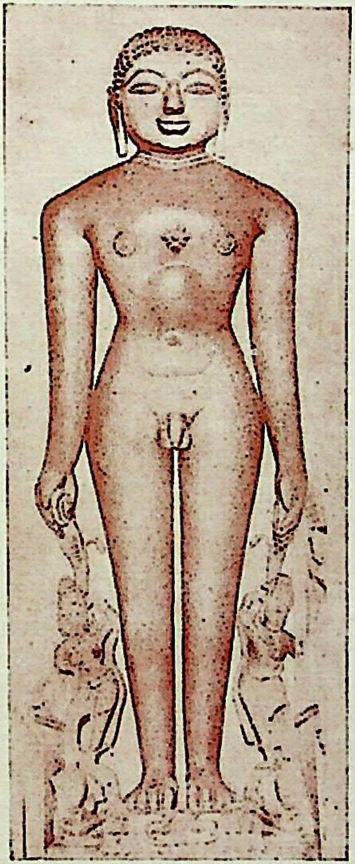

भगवान् शान्तिनाथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवीरवर्द्धमानस्य बिम्बं तत्पुण्यवृद्धये ।
कारितं केशवेनेदं तत्पुत्रेण निर्मलम् ॥
साहु श्रीमामटस्याऽपि पुत्रो देघहरानिध: ।
तेनापि कारितं चैत्यं तर्वादेवात्र चेतसा ॥

भावार्थ:—खण्डेलवाल वंशोत्पन्न तद्वंश के लिये सूर्य के समान वीरदेव हुए । जो बड़े बुद्धिमान् थे । उनके पुत्र अनुपमेय था । जो लक्ष्मी का निवास था, जिसकी आँखें कमलपत्र के समान थीं । जिसका मुख प्रसन्न था । और जो पंडितरूपी कमलों को विकसित करने के लिए सूर्य था । और जो निर्मल था । ऐसे कमलदेव हुए । उनके पुत्र केशव ने पुण्य-वृद्धि के लिये श्रीवीर वर्द्धमान भगवान् की प्रतिमा बनवाई ।

यह मूर्त्ति भी मन्दिर नं० १ के चौक में चिनी है । शिर धड़ से अलग है । पुनः जोड़ा गया है । बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है । करीब २ फुट पद्मासन है । पाषाण काला है । चिह्न दण्डका है ।

लेख नम्बर १७

सं० ११९९ चैत्र सुदी १३ गर्गरटान्वये साहु वाक तस्य सुत साह लालसाल्हण नाइव तस्य सुत साहु मालुराज सोमदेव एते नित्यं प्रणमन्ति ।

भावार्थ:—गर्गराट वंश में पैदा होने वाले शाह वाक उनके पुत्र शाह लालसाल्हण नाइव उसके पुत्र दो—मालुराज और सोमदेव ने ११९९ के चैत्र सुदी १३ को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई । ये सब सदा प्रणाम करते हैं ।

यह मूर्त्ति भी मन्दिर नं० १ के चौक में शिर जोड़ कर चिन दी गई है । वाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है । चिह्न शेर प्रतीत होता है । १॥ फुट की ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला है ।

लेख नम्बर १८

कुटकान्वये पंडितस्रीलक्ष्मणदेवस्तस्य शिष्य स्रीमदार्यदेव: तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्यिका ज्ञानस्त्री-साहेल्लिकामामातिणी एतया जिनबिम्बं प्रतिष्ठापितम् ।।
सं० १२१३

भावार्थः—कुटकवंशमें पैदा होनेवाले पंडित श्रीलक्ष्मणदेव उसके शिष्य श्रीमदार्यदेव तथा आर्यिका ज्ञानस्त्री-सहेल्लिकामामातिणी इन्होंने सं० १२१३ में जिनविम्ब की प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्त्ति मन्दिर नं० १ बाहरी जीना के बाईं तरफ एक छोटी कुटी में विराजमान है। दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं। आसन के नीचे देवियाँ बैठी हैं। दाईं तरफ का आसन टूट जाने से देवीकी मूर्त्ति भी टूट गई है। मूर्ति प्रायः अखण्डित है। सिर्फ घुटनों पर तथा नासिका तथा दाढ़ी का हिस्सा छिल गया है। दाएँ हाथका अंगूठा तथा पास की अंगुली टूट गई है। बायें हाथ के ऊपर का हिस्सा छिल गया है। करीब ६ फुट की खड्गासन है। काला पाषाण है। चिह्न हिरण का है। लेख घिस गया है। इसलिये पूरा पढ़ा नहीं जाता।

लेख नम्बर १६

सं० १२१६ माघ सुदी १३ शुक्रदिने ,कुटकान्वये पं० स्रीमङ्गलदेव तस्य शिष्य भट्टारक पद्मदेव तत्पट्टे..............................

भावार्थः—कुटकवंशोत्पन्न पं० श्रीमङ्गलदेव उनके शिष्य भट्टारक पद्मदेव उनकी पट्टावली में हुए··· ने सं० १२१६ के माघ सुदी १३ शुक्रवार के दिन विम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्त्तिके दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं। मूर्ति घुटनोंके पाससे बिल्कुल टूट गई है। दोनों हिस्से जोड़कर मन्दिर नं० १ के चबूतरे पर लिटा दी गई है। चिह्न वगैरह कुछ नहीं हैं। दो व्यक्तियोंने मिल कर प्रतिष्ठा कराई है ऐसा लेख से विदित होता है। इसी दिन इसी अवगाहनकी ३ मूर्तियाँ और भी उक्त दोनों व्यक्तियोंने प्रतिष्ठित कराई हैं। करीब ६ फुटकी खड्गासन है। पाषाण काला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर २०

सं० १२०३ माघ सुदी १३ जैसवालान्वये साहु खोने भार्या यशकरी सुत नायक साहुपाल-वील्हे-माल्हा-परमेमहीपति सुत श्रीरा प्रणमन्ति नित्यम्।

सं० १२०३ माघ सुदी १३ जैसवालान्वये साहु वाहड़ भार्या शिवदेवि सुतसोम-जनपाहुड-लाखू-लोले प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवालवंशोत्पन्न शाह खोने उनकी धर्मपत्नी यशकरी, उनके पुत्र नायक साहुपाल्ह वील्हे-माल्हा-परमे-महीपति ये पाँच तथा महीपति के पुत्र श्रीरा ने सं० १२०३ माघसुदी १३ को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

सं० १२०३ माघ सुदी १३ को जैसवालवंश में पैदा होने वाले शाह बाहड़, उनकी धर्मपत्नी शिवदेवि उनके पुत्र चार—सोम, जनपाहुड़, लाखू, लाले इन्होंने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्त्ति का शिर पूरा खंडित है। करीब १।। फुट की पद्मासन है। काले पाषाण की बनी हुई है। चिह्न शङ्ख का है। शिलालेख स्पष्ट दीखता है। मूर्त्ति की पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर २१

स० १२२८ फागुन सुदी १२ जैसवालान्वये साहु देन्द्र भ्रात ईल्ह सुत वाल्ह सुत कुल्हा वीकलोहट वाल्ह सुत आसवन प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवाल वंशोत्पन्न साहु देन्द्र उनके भाई ईल्ह उनके पुत्र वाल्हू उनके पुत्र कुल्हा वीक-लोहट-वाल्ह उनके पुत्र आसवन इन्होंने वि० सं० १२२८ के फागुन सुदी १२ को बिम्बप्रतिष्ठा कराई।

मूर्त्ति का शिर नहीं है। तथा दोनों हाथ भी नहीं हैं। सिर्फ धड़ मय आसन के रूप में उपलब्ध है। चिह्न वगैरह कुछ नहीं हैं। लेख स्पष्ट है। करीब १।। फुट की पद्मासन है। काला पाषाण है। पॉलिश चमकदार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर २२

सं० १२३७ मार्गसुदी ३ शुक्रे गोलापूर्वान्वये साहु यशार्ह पुत्र ऊदे तथा वील्हण एते श्रीनेमिनाथं नित्यं प्रणमन्ति। मंगलं महाश्री ॥

भावार्थ:—गोलापूर्व-वंशोत्पन्न शाह यशार्ह उनके पुत्र ऊदे तथा वील्हण ये श्रीनेमिनाथ को सं० १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को प्रतिष्ठा कराकर नित्य प्रणाम करते हैं।

मूर्त्ति का शिर और दोनों हाथ नहीं हैं। सिर्फ धड़ और आसन विद्यमान है। आसन पर लेख के अतिरिक्त कुछ नहीं है। चिह्न बैल का हैं। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर २३

सं० १२१४ फागुन बदी ४ सोमे अवधपुरान्वये ठक्कुर श्रीनान्न सुत ठक्कुर नीनेकस्य भार्या पाल्हणि नित्यं प्रणमन्ति कर्मक्षयाय।

भावार्थ:—अवधपुरिया वंशोत्पन्न ठक्कुर नान्न उनके पुत्र ठक्कुर नीनेक उनकी धर्मपत्नी पाल्हणि ने सं० १२१४ के फागुन बदी ४ सोमवार को प्रतिष्ठा कराई। कर्मों के क्षय के लिए प्रतिदिन नमस्कार करते हैं।

मूर्त्ति का शिर नहीं है। बाकी तमाम अङ्गोपाङ्ग विद्यमान हैं। चिह्न शेर का है। हथेली कुछ छिल गई है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला हैं।

लेख नम्बर २४

सं० १२०९ आषाढ़ वदी ४ शुक्रे जैसवालान्वये नायक श्रीसाहु-कसस प्रतिमा गोठिता।

भावार्थ:—जसवाल वंशोत्पन्न नायक श्रीसाहु कसस ने संवत् १२०९ के आषाढ़ वदी ४ शुक्रवार को प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई।

मूर्त्ति का शिर और दोनों हाथों के पहुँचे नहीं हैं। बाकी हिस्सा ज्यों का त्यों उपलब्ध है। चिह्न शेर का है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर २५

संवत् १२१३ गोलापूर्वान्वये साहु साल्ह भार्या सलषा तयोः सुत पोखन एते प्रणमन्ति नित्यम् । आषाढ़ सुदी २ ।

भावार्थ:—गोलापूर्व वंशोत्पन्न शाह साल्ह उसकी धर्मपत्नी सलषा इन दोनों के पुत्र पोखन इन्होंने सं० १२१३ के आषाढ़ सुदी २ को प्रतिबिम्ब पधराई । ये नित्य प्रणाम करते हैं ।

मूर्त्ति का शिर और दोनों हाथों के अतिरिक्त बाकी धड़ उपलब्ध है । चिह्न की जगह अष्टदल कमल है । करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला है ।

लेख नम्बर २६

संवत् १२१६ फागुन वदी ८ सोम दिने सिद्धान्तश्री सागरसेन आर्यिका जयश्री रिषिणी रतनरिषि प्रणमन्ति नित्यम् । जैसवालान्वये साहु वाहेडभार्या सिवदे पुत्री सावनी मालती पदमा-मदना प्रणमन्ति नित्यम् ।

भावार्थ:—सं० १२१६ के फाल्गुन वदी ८ सोम को सिद्धान्त श्री सागरसेन तथा आर्यिका जयश्री और श्रीरतनऋषि ने बिम्ब-प्रतिष्ठा कराई ।

तथा जैसवाल वंशोत्पन्न बाहड़ उनकी धर्मपत्नी सिवदे उनकी पुत्री-सावनी, मालती, पदमा, मदनाने उक्त संवत् में उक्त महात्माओं के आदेश से अपने द्रव्य का सदुपयोग किया ।

मूर्त्ति के आसन के अतिरिक्त शिर और धड़ कुछ भी नहीं है। आसन से पता चलता है कि प्रतिबिम्ब मनोज्ञ थी । चिह्न शेरका है । करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला है ।

लेख नम्बर २७

संवत् १२१० मइडितबालान्वये साहु श्रीसेठो भार्या महिव तयोः पुत्राः श्रील्हा श्रीबर्द्धमान-माल्हा, एते श्रेयसे प्रणमन्ति नित्यम् । वैशाख सुदी १३ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ:—वि० सं० १२१० के वैशाख सुदी १३ को मड्डित-वालवंशोत्पन्न शाह सेठो उनकी धर्मपत्नी महिव उनके पुत्र—श्री ल्हा, श्रीवर्द्धमान-माल्हा ये सब पुण्य-वृद्धि के लिये प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

मूर्त्ति का शिर और दोनों हाथों की हथेली नहीं है। बाकी तमाम हिस्सा उपलब्ध है। चिह्न से ही प्रतीत होता है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर २८

संवत् १२०२ चैत्र सुदी १२ लमेच्चुकान्वये साहु भाने भार्या पद्मा सुत हरसेन, नायक कदलसिह, देवपाल्ह एते प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थ:—वि० संवत् १२०२ के चैतसुदी १२ को इस प्रति-बिम्ब की प्रतिष्ठा हुई। लमेचूवंशोत्पन्न शाहभाने उनकी पत्नी पद्मा, उनके पुत्र हरसेन, नायक कदलसिह, देवपाल्ह ये प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

मूर्ति का शिर तथा बायाँ हाथ नहीं है। आसन पर दोनों हथेली नहीं हैं। चिह्न वगैरह कुछ नहीं है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर २९

संवत् १२०० आषाढ़ वदी ७ जैसवालान्वये साहु खोने भार्या जाउह सुत साढू तथा पाल्ह-वील्हा-आल्हे-पदमा श्रेयसे प्रणमन्ति।

लेखों के कुछ भाग जो इसमें नहीं आये, मैटरमें छूट गये हैं।

भावार्थ:—सं० १२०० आषाढ़वदी ८ जैसवालान्वये साहु खोने भार्या जाउह, सुत साढू, तथा पाल्ह वील्हा आल्हे पदमा श्रेय से प्रणाम करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्त्ति का शिर और दोनों हाथ नहीं हैं। आसन से पता चलता है कि मूर्ति कुछ बड़ी थी। चिह्न शेर का हैं। करीब दो फुट ऊँची होगी, पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ३०

संवत् १२०६ वैशाख सुदी १३ माधुवान्वये, साहु यशवन्त तस्य सुत साहु यसदह तस्य भार्या माहिणि तयोः पुत्रः श्यामदेव एते प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—माधुवावंशोत्पन्न शाह यशवन्त उनके पुत्र साहु यशदह उनकी धर्मपत्नी माहिणि उन दोनों के पुत्र श्यामदेव ने इस बिम्ब की सं० १२०६ वैशाखसुदी १३ को प्रतिष्ठा कराई। ये सब उसे सदा प्रणाम करते हैं।

मूर्ति का सिर्फ आसन उपलब्ध है। बाकी आङ्गोपाङ्ग नहीं है। चिह्न शेरका है। करीब१। फीट पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ३१

संवत् १२१० वैशाख सुदी १३ पंडित श्रीविशालकीर्ति अर्जिका त्रिभुवनश्री तया: शिष्यणी पूर्णश्री तथा धनश्री एता: प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—संवत् १२१० वैसाखसुदी १३ को पं० श्रीविशाल-कीर्त्ति और आर्यिका त्रिभुवनश्री तथा उनकी शिष्यणी पूर्णश्री एवं धनश्री ये सब प्रणाम करते हैं।

मूर्त्ति के आसन के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न बैल का है। करीव १।। फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ३२

संवत् १२०२ चैत्रसुदी १३ गोलापूर्वान्वये नायक श्रीरतन तस्य सुत आल्ह-पोल्ह-सामदेव-भामदेव प्रणमन्ति नित्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ:—गोलापूर्ववंशोत्पन्न नायक श्रीरतन उनके पुत्र त्राल्ह-पोल्ह-सामदेव-भामदेव संवत् १२०२ के चैत्र सुदी १३ को विम्ब प्रतिष्ठा कराके प्रतिदिन नमस्कार करते हैं।

मूर्ति का सिर्फ सिर नहीं है। बाकी सर्व आङ्गोपाङ्ग उपलब्ध है। चिह्न वगैरह कुछ नहीं है। करीब १॥। फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ३३

संवत् १२१० वैशाखसुदी १३ मेड़तवालवंशे साहु प्रयणराम तत्सुत हरसू एतो नित्यं प्रणमन्तः।

भावार्थ:—सं० १२१० वैशाख सुदी १३ को मेड़तवालवंश में पैदा हुए साहु प्रयणराम उनके पुत्र हरसू ये दोनों बिम्ब प्रतिष्ठा कराके प्रणाम करते हैं।

मूर्ति के दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं। घुटनों तक पैरों के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न दो हिरणों का है। करीब ३ फुट ऊँचाई है। मूर्त्ति खड्गासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ३४

संवत् १२०६ गौलापूर्वान्वये साहु महिदीन तस्य पुत्रस्युपस्यु तथा अर्हंमामक प्रणमन्तः।

भावार्थ:—गोलापूर्ववंशोत्पन्न साहु महिदीन उनके पुत्र स्युपस्यु तथा अर्हंमामक, संवत् १२०६ में प्रतिष्ठा कराके प्रणाम करते हैं।

मूर्त्ति का शिर नहीं है। वाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। चिह्न शेर का है। करीब १॥। फुट ऊँची है। पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ३५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संवत् १२१६ माहसुदी १३ श्रीमत्कुटकान्वये पण्डितलक्ष्मणदेवस्तस्य शिष्यार्यदेव आर्यिका लक्ष्मश्री तच्चेल्लिका चारित्रश्री तद्भ्राता लिम्वदेव एते श्रीमद्वर्द्धमानस्य त्रिम्वं अहिनिशि प्रणमन्ति।

भावार्थः--संवत् १२१६ माघसुदी १३ के शुभ दिनमें कुटक-वंश में पैदा होने वाले पंडित लक्ष्मणदेव उनके शिष्य आर्यदेव तथा आर्यिका लक्ष्मश्री उनकी सहचरी चारित्रश्री उनके भाई लिम्वदेव श्रीवर्द्धमान भगवान की प्रतिमा को प्रतिष्ठापित करा के प्रतिदिन नमस्कार करते हैं।

मूर्त्तिका आसन तथा कुहिनियों तक हाथ अवशिष्ट हैं। बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न सिंह का प्रतीत होता है। करीव २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ३६

संवत् १२२५ जेठसुदी १५ गुरुदिने पंडितश्रीजसकीर्त्तिशीलदिवाकर-नीपद्मश्रीरतनश्री प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—संवत् १२२५ जेठ सुदी १५ गुरुवार को पंडित श्रीयशकीर्त्ति तथा शीलदिवाकरनी पद्मश्री और रतनश्री ने विम्वप्रतिष्ठा कराई।

आसन और आधे हाथों के अतिरिक्त मूर्त्ति का बाकी हिस्सा खंडित है। आसन चौड़ा और मनोहर है। चिह्न वैल का है। करीव २ फुट की ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। आसन टूट गया है इसलिये लेख अधूरा है।

लेख नम्बर ३७

स० १२१० वैशाख सुदी १३ गृहपत्यन्वये साहुसुलधस्य सुत……।

भावार्थः—संवत् १२१० के वैशाख सुदी १३ को गृहपति वंशोत्पन्न साहु सुलध उनके पुत्र…… ने प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोनों तरफ दो इन्द्र खड़े हैं। आसन और कुछ पैरों के अति-रिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न को देखकर अरहनाथ की प्रतिमा मालूम होती है। करीव ३ फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला है। इस मूर्त्ति का धड़ मन्दिर नं० १ की दीवार में खचित है, ऐसा नाप से मालूम होता है।

लेख नम्बर ३८

सं० १२०६ गोलापूर्वान्वये साहु सुपट भार्या अल्ह तस्य पुत्र सान्ति पुत्र देल्हल अरहनाथं प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—गोलापूर्ववंशोत्पन्न साहु सुपट उनकी पत्नी अल्ह उसके पुत्र शान्ति तथा पुत्र देल्हल ने इस विम्ब की संवत् १२०६ में प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का शिर और हथेलियों के अतिरिक्त वाकी हिस्सा उपलब्ध है। चिह्न बैल का है। करीव २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ३९

सं० १२०३ माघ सुदी १३ वैश्यान्वये साहु सुपट भार्या गंगा तस्य सुतः साहु रासल पाल्हऋषि प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—वैश्य कुल में पैदा होने वाले सुपट उनकी धर्म-पत्नी गंगा उनके पुत्र साहु रासल तथा पाल्ह ऋषि ने सं० १२०३ माघसुदी १३ गुरुवार में प्रतिष्ठा कराई।

मूर्त्ति का शिर और आधे हाथों के अतिरिक्त सब अङ्ग प्राप्य हैं। चिह्न बैल का है। करीव २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ४०

सं० १२३७ मार्ग सुदी ३ शुक्रे गोलापूर्वान्वये साहु वाल्ह भार्या मदना वेटी रतना श्रीऋषभनाथं प्रणमन्ति नित्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—संवत् १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले साहु वाल्ह उनकी पत्नी मदना और उनकी पुत्री रतनाने श्रीऋषभनाथके प्रतिविम्ब की प्रतिष्ठा कराई। ये सब नित्य प्रणाम करते हैं।

मूर्ति के आसन के अतिरिक्त बाकी आङ्गोपाङ्ग नहीं हैं। आसन चौड़ा है। चिह्न बैल का है। करीब २॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ४१

गोलापूर्वान्वये साहुरासल तस्य सुत साहु मामे प्रणमन्ति। गृहपत्यन्वये साहु केशव भार्या शान्तिणी साहु वावण सुत माल्ह प्रणमन्ति।

संवत् १२०३ गोलापूर्वान्वये साहुयाल्ह तस्य भार्या पल्हा तयोः पुत्र बछराऊदेव-राजजस-बेवल प्रणमन्ति नित्यम्। आषाढ़ सुदी २ सोमे।

भावार्थः—गोलापूर्व वंशमें पैदा होने वाले साहु रासल उनके पुत्र साहु मामे दोनों प्रणाम करते हैं। तथा गृहपति वंश में पैदा होने वाले साहु केशव उनकी धर्मपत्नी शान्तिणी और साहु वावण उनके पुत्र माल्हने बिम्बप्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रणाम करते हैं।

तथा सम्वत् १२०३ के आषाढ़ सुदी २ सोमवार को गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले साहु याल्ह उनकी धर्मपत्नी पल्हा उन दोनों के पुत्र बछरायदेव-राजजस-बेवल प्रतिष्ठा कराके प्रतिदिन नमस्कार करते हैं।

नोट—इस मूर्ति के प्रतिष्ठापक गोलापूर्व और गृहपति इन दो जातियों में पैदा होने वाले तीन कुटुम्ब के सदस्य हैं जिन्होंने अपनी गाढ़ी कमाई का द्रव्य लगाकर यह बिम्ब निर्माण कराया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्त्ति का शिर तथा दायाँ हाथ नहीं है। बाकी हिस्सा उप-लब्ध है। लेख का प्रारम्भिक कुछ हिस्सा टूट गया है। २१० बचा है। अतः नीचे लेख में सं० १२१० अनुमान से लिखा गया है। चिह्न बैल का है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ४२

सं० २१० (१२१०) पौरपाटान्वये साहुश्री गपधर भार्या गांग सु साढ़-माहव एते सर्वे श्रेयसे प्रणमन्ति नित्यम्। वैशाखसुदी १३ बुधदिने

भावार्थः—संवत् १२१० (?) के वैशाख सुदी १३ बुधवारको पौरपाटवंश में पैदा होने वाले साहु श्रीगपधर उनकी भार्या गांग उनके पुत्र सोढ़-माहव इन्होंने मोक्ष प्राप्त करने के लिये बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसंन और हाथ के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न हाथी का है। करीब २॥ फ़ीट ऊँची पद्मासन है पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ४३

सं० १२१० वैशाख सुदी १३ जैसवालान्वये साहु देल्हण भार्या पाल्ही तत्सुत पंडित राल्ह भार्या कोहणी तत्सुत वर्द्धमान ग्रामदेव श्रेयसे प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवाल वंश में पैदा होने वाले साहु देल्हण उनकी पत्नी पाल्ही उनके पुत्र पंडित राल्ह उनकी धर्मपत्नी कोहणी उसके पुत्र वर्द्धमान-ग्रामदेव ने मोक्ष प्राप्त करने के लिये सं० १२१० वैशाख सुदी १० को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसन के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न बन्दर का मालूम होता है। करीब १॥। फुट ऊँची पद्मासन है पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर ४४

सिद्धान्तिश्रीसागरसेन आर्यिका जयश्री तस्य बैल्लि (?) रतनश्री। सं० १२१६ माघसुदी १३ शुक्रे जैसवालान्वये साहु वाहड़ भार्या श्रीदेवि पुत्री सावित्री एता: प्रणमन्ति।

भावार्थ:—सिद्धान्ति श्रीसागरसेन आर्यिका जयश्री उनके पास में रहने वाली रत्नश्री और जैसवाल वंश में पैदा होने वाले साहु बाहड़ उनकी पत्नी श्री देवि तथा पुत्री सावित्री ने संवत् १२१६ के माघ सुदी १३ शुक्रवार को बिम्बप्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के दोनों हाथों की हथेलियों तथा आसन के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न हिरण का है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ४५

संवत् १२०३ साहु सांतन तस्य पुत्र लद्दू तस्य भार्या मलगा प्रणमंति नित्यम्।

भावार्थ:—संवत् १२०३ में साहु शान्तन उनके पुत्र लद्दू उनकी पत्नी मलगा ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति की हथेली औ शिर के अतिरिक्त बाकी हिस्सा उपलब्ध है। चिह्न चन्द्र का है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ४६

संवत् १२०७ माघ बदी ८ गृहपत्यन्वये साहु सोने तस्य भार्या होवा तत्सुत दिवचंद्र अष्टकर्मक्षयाय कारापितेयं प्रतिमा।

भावार्थ:—गृहपति वंश में पैदा होने वाले साहु सोने उनकी धर्मपत्नी होवा उनके पुत्र दिवचन्द्र ने सम्वत् १२०७ के माघवदी ८ को अष्टकर्मक्षय के लिये प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई।

मूर्ति का शिर और बाएँ हाथ के अतिरिक्त बाकी हिस्सा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अखण्डित है। आसन के नीचे का हिस्सा कुछ छिल गया है, अतः कुछ लेख और चिह्न नहीं है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ४७

संवत् १२११ फा......भार्या पापा तत्सुत साहु सीतल भार्या पाल नित्यम् प्रणमन्ति।

भावार्थ:—संवत् १२११ (के फागुन मास) में.....पत्नी पापा उनके पुत्र साहु सीतल उनकी पत्नी पाला ने बिम्बप्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का शिर नहीं है। दोनों हथेली छिल गई हैं। चिह्न चकवा का मालूम होता है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ४८

सं० १२३७ आग्रहन सुदी ३ शुक्रे खंडिल्लवालान्वये साहु वाल्हण भार्या वस्ता सुत लाखना विघ्ननाशाय प्रणमंति नित्यम्।

भावार्थ:—खंडेलवाल वंश में पैदा होने वाले साहु वाल्हण उनकी पत्नी वस्ता उसके पुत्र लाखना ने संवत् १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को विघ्नों के नाश करने के लिये इस बिम्ब की प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसन के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न बैल का है। बाँया घुटना ढूँढ़ कर मिलाया है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला और चमकदार है।

लेख नम्बर ४९

संवत् १२०७ माघ वदी ८ मडवालान्वये साहु सेठ दा।या।मारु तस्य सुत सुरदमोल्ह-केलाम सर्वे प्रतिमा कारापिता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—मडवाल वंश में पैदा होने वाले साहु दायामारू उनके पुत्र सुरद माल्ह-केलाम इन सवों ने संवत् १२०७ माधवदी को यह प्रतिष्ठा कराई।

दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं। चिह्न वज्रदण्ड का है। शिर नहीं है, वाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। करीब २ फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला और चमकदार है।

लेख नम्बर ५०

संवत् १२०९ वैशाख सुदी १३ पौरपाटान्वये साहुकोके भार्या मातिणी साहु महेश भार्या सलखा।

भावार्थः—पौरपाटवंश में पैदा होने वाले साहु कोके उनकी भार्या मातिणी और साहु महेश उनकी धर्मपत्नी सलखाने संवत् १२०९ के वैशाख सुदी १३ को बिम्बप्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का सिर्फ आसन अवशिष्ट है, जो काफी चौड़ा है। परन्तु बीच से टूट गया है। अतः जोड़कर लेख लिया गया है। कुछ अक्षर उड़ गये हैं। चिह्न शेर का है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ५१

संवत् १२०३ आषाढ़ वदी ३ शुक्रे श्रीवीरवर्द्धमानस्वामिप्रतिष्ठापिकः— गृहपत्यन्वये साहु श्रीउल्कण ···· अल्हण साहु मातेण। वैश्यवालान्वये साहु वासलस्तस्य दुहिता मातिणी साहु श्रीमहीपति।

भावार्थः—गृहपति वंश में पैदा होने वाले साहुश्री उलकण ···अल्हण तथा साहु मातेण और वैश्यकुल में पैदा होने वाले साहु वासल उनकी पुत्री मातिणी और साहु श्रीमहीपति ने सं० १२०३ आषाढ़ वदी ३ शुक्रवार को यह श्रीवर्द्धमान स्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोनों ओर इन्द्र खड़े हैं। मूर्ति कमर के पास टूट गई है। दोनों धड़ उठा कर इकट्ठे कर दिये हैं। शिलालेख के कुछ अक्षर घिस गये हैं। अतः पूरे पढ़े नहीं गये। करीब ५ फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ५२

संवत् १२०३ माघ सुदी १३ जैसवालान्वये [साहु खोने भार्या यशकरी सुत नायक साहु भ्रातृ पाल्हणवील्हे माल्हा परमे मह्रिणि सुतश्रीरा प्रणमन्ति नित्यम्।

संवत् १२०३ माघसुदी १३ जैसवालान्वये साहु बाहड़ भार्या शिवदेवि सुत साहु सोमिनि भ्राता साहु माहल्जनप्राहड़ लाखू लाल्हे प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवाल वंश में पैदा होने वाले साहु खोने उनकी धर्मपत्नी यशकरी उनके पुत्र साहु नायक उनके भाई साहु पाल्हण-वील्हे-माल्हा-परमे-माहिणि उनके पुत्र श्रीराने संवत् १२०३ माघ सुदी १३ को विम्वप्रतिष्ठा कराई।

तथा जैसवाल वंश में पैदा होने वाले साहु बाहड़ उनकी धर्मपत्नी शिवदेव उनके पुत्र साहु सोमिन उनके भाई साहु माल्हजनप्राहड़-लाखू-लाल्हे ने संवत् १२०३ के माघ सुदी १३ को विम्व प्रतिष्ठा कराई।

नोटः—यह प्रतिविम्व दो धर्मात्मा महाशयों ने अपनी गाढ़ी कमाई की द्रव्य लगाकर प्रतिष्ठा कराई है।

मूर्ति का शिर और हाथों के अतिरिक्त वाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न से पता चलता है कि पुष्पदन्त की प्रतिमा है। करीब २। फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ५३

संवत् १२१३ आषाढ़ सुदी २ भौमे गृहपत्यन्वयें साहुजसकरस्तस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन मूर्ति

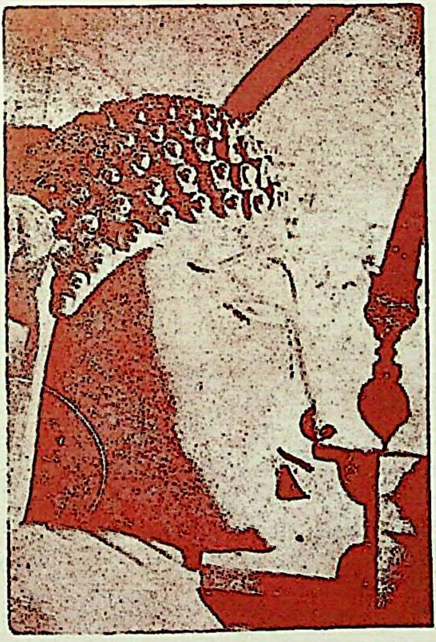

श्री शान्तिनाथ का मस्तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

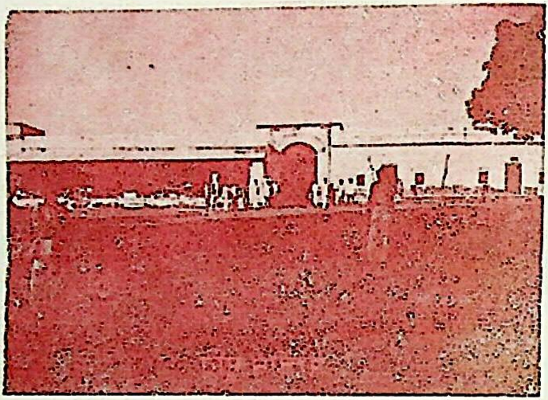

रथ घर व कमरे

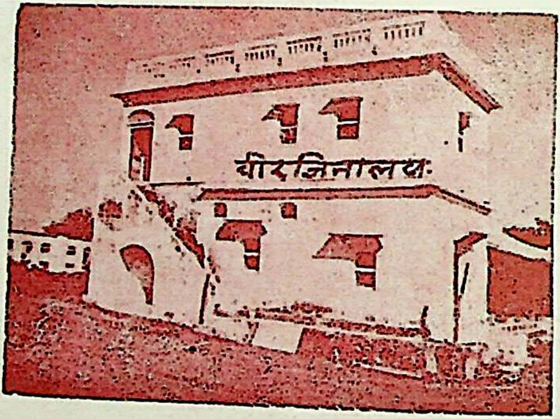

वीर जिनालय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भार्या रोहणी तयोः पुत्रवासलस्तस्य लघुभ्रातः साहु नाने तस्य भार्या पाल्हा तथा अल्हा नित्यं प्रणमन्ति ।

भावार्थः—गृहपति वंश में पैदा होने वाले साहु जशकर उनकी धर्मपत्नी रोहणी–उन दोनों के पुत्र बासल उनके छोटे भाई साहु नाने उनकी धर्मपत्नी पाल्हा और अल्हा ने संवत् १२१३ के आषाढ़ सुदी ८ भौम को प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का शिर और दोनों हाथ नहीं हैं। बाकी आङ्गोपाङ्ग उपलब्ध हैं। चिह्न बैल का है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ५४

खण्डेलवालान्वये साहु धामदेव भार्या पल्हा पुत्रसालू भार्या वस्ना संवत् १२२३ वैशाख सुदी ८ प्रणमन्ति नित्यम्।'

भावार्थः—खण्डेलवाल वंश में पैदा होने वाले साहु धामदेव उनकी पत्नी पल्हा उनके पुत्र सालू उनकी पत्नी वस्ना ने संवत् १२२३ के वैशाख सुदी ८ को प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसन के अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है। चिह्न चन्द्र का है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ५५

संवत् १२०७ माघ बदी ८ गुरौ ग्रहपत्यन्वये साहु सवघऊ तद्भार्या महनी तत्पुत्र उदयबन्धु प्रणमन्ति श्रेयसे।

भावार्थः—गृहपति वंश में पैदा होने वाले शाह सवघऊ उनकी धर्मपत्नी महनी उसके पुत्र उदयबन्धु ने संवत् १२०७ के माघ वदी ८ गुरुवार को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसन और आधे हाथों के अतिरिक्त बाकी हिस्सा खण्डित है। शेर का चिह्न है। करीब २ फुट की पद्मासन है। पाषाण काला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर ५६

संवत् १२११ फागुनसुदी ८ शुक्रे श्रीमाथुरान्वये साहु जिनदेव सुत साहु अर्हंत भार्या किणवती सुत साहु वीठु नियं प्रणमन्ति।

भावार्थः--माथुरवंश में पैदा होने वाले शाह जिनदेव उनके पुत्र शाह अर्हंत उनकी धर्मपत्नी किणवती उसके पुत्र शाह बीठु ने संवत् १२११ के फागुन सुदी ८ शुक्रवार को प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसन और आधे हाथों के अतिरिक्त बाकी हिस्सा खंडित है। लेख प्रायः घिस गया है। अतः पूरा स्पष्ट नहीं पढ़ा गया। चिह्न हिरण का है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला और चमकदार है।

लेख नम्बर ५७

संवत् १२३० फागुनसुदी १२ सनौ............. सुतषड-गण भार्या शान्तिणी सुत गांगदेव-सोमदेव-उदय गोरद प्रणमन्ति।

भावार्थः—संवत् १२३० के फागुन सुदी १२ शनिवार को... शाह षडगण उनकी पत्नी शान्तिणी उनके पुत्र गांगदेव-सोमदेव-उदय-गोरद ने यह बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के दोनों ओर इन्द्र खड़े हैं। शिर खंडित है। बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। चिह्न बकरे का है। करीब ३ फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ५८

संवत् १२०३ गोलापूर्वान्वये साहु सुपट तस्य पुत्रः शांति तस्य पुत्र यशकर कुंथुनाथं प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले साहु सुपट उनके पुत्र शान्ति उनके पुत्र यशकर ने श्रीकुन्थुनाथ की प्रतिमा की संवत् १२०३ में प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ति के दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं। घुटनों तक पैरों के अतिरिक्त बाकी हिस्से अनुपलब्ध हैं। चिह्न कुछ नहीं है। करीब ६ फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला तथा पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ५९

संवत् १२०६ माघसुदी १३ जैसवालान्वये साहु षोने भार्या जसकरी सुतनायक साहु शान्तिपाल-वील्हे पाल्हा-मरमे-महिपाल सुत-श्रीरा प्रणमन्ति नित्यम्।

संवत् १२०३ माघसुदी १३ जैसवालान्वये साहु वाहड भार्या शिवदेवि सुत सोम-जनप्राहड़लाखूलाले प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवाल वंश में पैदा होने वाले साहु षोने उनकी धर्मपत्नी यशकरी उनके पुत्र नायकशाह शान्तिपाल-वील्हे-माल्हा परमे महीपाल महीपाल के पुत्र श्रीराने संवत् १२०३ के माघसुदी १३ को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

तथा जैसवाल वंश में पैदा होने वाले शाह वाहड़ उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी उनके पुत्र सोमजनप्राहड़-लाखू-लाले इन्होंने संवत् १२०३ माघसुदी १३ को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

नोट—यह मूर्ति एक वंश के दो भिन्न प्रतिष्ठापकों ने प्रतिष्ठित कराई।

मूर्ति का सिर्फ एक घुटना मय आसन के उपलब्ध है। बाकी हिस्से नहीं हैं। लेख करीब आधे से ज्यादा खंडित हो गया है। चिह्न घोड़े का है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ६०

संवत् १२०३ गोलापूर्वान्वये साहुपद्म साहुणाल्ह······।

भावार्थः—गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले साहु पद्म तथा साहु णाल्हने······सं० १२०३ में यह बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोनों ओर इन्द्र खड़े हैं। आधे पैरों के अतिरिक्त बाकी हिस्सा खण्डित है। शिलालेख जोड़ कर लिया गया है। करीब पाँच फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ६१

साहु देवचन्द्र प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—साहु देवचन्द्र जिनबिम्ब प्रतिष्ठित कराके प्रतिदिन नमस्कार करते हैं।

नोट—मूर्ति में संवत् तथा तिथि नहीं है।

मूर्ति का शिर नहीं है। बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। यह प्रतिमा चिह्न को देखकर पुष्पदन्त की प्रतीत होती है। करीब २।। फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला तथा चमकदार है।

लेख नम्बर ६२

संवत् १२०७ माघ वदी ८ जैसवालान्वये साहु तनस्तत्सुताः श्रीदेव-नूकान्त-भूपसिंह प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवाल वंश में पैदा होने वाले साहु तन उनके पुत्र श्रीदेव-नूकान्त-भूपसिंह ने संवत् १२०७ के माघ वदी ८ को विम्बप्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का शिर धड़ से अलग है। अवगाहना से पता चलता है कि मूर्ति विशाल थी। चिह्न से प्रतीत होता है कि प्रतिमा ऋषभदेव तीर्थङ्कर की है।

लेख नम्बर ६३

संवत् १२१० वैशाख सुदी १३ ग्रहपत्यन्वये साहु श्रीसाढू भार्या मना तयोः सुत साहु शीले भार्या रूपा तयोः सुत देवचन्द्र एते प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—गृहपति वंश में पैदा होने वाले साहु साढू उनकी पत्नी मना उनके पुत्र साहु शीले उनकी पत्नी रूपा उन दोनोंके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुत्र देवचन्द्र इन्होंने संवत् १२१० के वैशाख सुदी १३ को यह विम्ब प्रतिष्ठित कराई।

मूर्ति का शिर नहीं है। वाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है। चिह्न को देखकर मुनिसुव्रत की प्रतीत होती है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ६४

—संवत् १२८८ माघ सुदी १३ गुरौ प्रख्यातवंशे गोलापूर्वान्वये साहुरासल सुत साढू गृहपतिवंशे साहु आमदेव-हामरमल सुत पण्डित श्रीमालधन तथा साहु निकट सुत साहु सीहालहारणरस्तत्पुत्र जनपति ज्ञानचाकर वामदेव तथा गोपाल्ह पुत्र नागदेव प्रणमन्ति। चारउ प्रणमन्ति तटे मदनसागरनिर्मलम्।

भावार्थः— प्रसिद्ध वंश गोपालपूर्व अन्वय में पैदा होने वाले शाह राशल उनके पुत्र साढू तथा गृहपति वंश में पैदा होने वाले शाह आमदेव-हामरमल उनके पुत्र पण्डित श्री मालधन तथा शाह निकट उनके पुत्र शाह सीहाल-हारण उनके पुत्र जनपति ज्ञानचाकर वामदेव तथा गोपाल्ह उनके पुत्र नागदेव ने संवत् १२८८ के माघ सुदी १३ गुरुवार को निर्मल मदनसागर के किनारे विम्ब प्रतिष्ठा कराई।

नोट—यह प्रतिबिम्ब दो वंशों के दो धार्मिक पुरुषों ने प्रतिष्ठित कराई है। मदनसागर के तट पर आज भी जिनमंदिर के वड़े-बड़े भग्नावशेष उपलब्ध हैं और जिनसे जान पड़ता है कि वहाँ लेख में उल्लिखित दोनों धर्मात्माओं के द्वारा बनाया गया यह जिन मंदिर होगा और जिसमें प्रतिष्ठित की गई प्रतिमा का उक्त लेख है।

मूर्ति का शिर धड़ से अलग है। अवगाहना विशाल है। यह चिह्न से पुष्पदन्त की प्रतीत होती है। करीब २॥ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर ६५

संवत् १२०७ माघ वदी ८ खण्डेलवालान्वये साहु माहवस्तत्सुत वालप्रसन भार्या सावित्री तत्सुत बीकऊ नित्यं प्रणमन्ति ।

भावार्थः— खण्डेलवाल वंश में पैदा होने वाले साहु माहव उनके पुत्र वालप्रसन उनकी पत्नी सावित्री उनके पुत्र बीकऊ ने संवत् १२०७ माघ वदी ८ को बिम्ब-प्रतिष्ठा कराई ।

मूर्ति के कुछ पैर और आसन के अतिरिक्त कुछ नहीं है । अन्दाजा ३ फुट ऊँची खड्गासन है । चिह्न से पुष्पदन्त की प्रतीत होती है । काले पाषाण की निर्मित है ।

लेख नम्बर ६६

संवत् १२०७ माघ वदी ८ गृहपत्यन्वये साहुरूपसिंह तस्य भार्या लखमा तत्सुत मातनपति तस्य भार्या लाहणा ।

भावार्थः—गृहपति वंश में पैदा होने वाले साहु रूपसिंह उनकी धर्मपत्नी लखमा उसके पुत्र मातनपति उसकी पत्नी लाहणा इन्होंने संवत् १२०७ के माघ वदी ८ को प्रतिष्ठा कराई ।

मूर्ति के कुछ पैर तथा आसन के अतिरिक्त कुछ नहीं है । दोनों ओर इन्द्र खड़े हैं । करीब ३ फुट ऊँची है । चिह्न हाथी का है । पाषाण काला है ।

लेख नम्बर ६७

साहु लखन नित्यं प्रणमन्ति ।

भावार्थः—शाह लखन नित्य प्रणाम करते हैं ।

नोट–मूर्त्ति पर संवत् आदि नहीं दिया गया ।

मूर्ति के दोनों ओर इन्द्र खड़े हैं । कुछ पैरों के अतिरिक्त वाकी हिस्सा खण्डित है । चिह्न सूअर का प्रतीत होता है । करीब ३ फुट ऊँची खड्गासन है । पाषाण काला तथा चमकदार है ।

लेख नम्बर ६८

संवत् १२१६ माघ सुदी ३ शुक्रे साहु श्रामदेव - देवचन्द्र प्रणमन्ति नित्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः– संवत् १२१६ के माघ सुदी ३ शुक्रवार को ग्राम देव—देवचन्द्र ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति यद्यपि देशी पाषाण की है तो भी मनोज्ञ है। लेख कुछ घिस गया है। करीब १ फुट ऊँची खड्गासन है। चिह्न हिरण का है।

लेख नम्बर ६९

देउवालान्वये रयन प्रणमन्ति सं० ११२३

भावार्थः—देउवाल वंश में पैदा होने वाले (शाह) रयनने संवत् ११२३ में प्रतिष्ठा कराई।

नोट—उपलब्ध मूर्ति लेखों में यह सबसे प्राचीन लेख है।

मूर्ति के कई उपांग खंडित हो चुके हैं। चिह्न सिंह का है। पाषाण देशी है। करीब १।। फुट ऊँची खड्गासन है।

लेख नम्बर ७०

खंडिलवालान्वये साहु बालचन्द्र भार्या सावित्री-मवी वील्हा प्रणमन्ति।

भावार्थः– खंडेलवाल वंश में पैदा होने वाले शाह बालचन्द्र उनकी पत्नी सावित्री-मवी-वील्हा ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति के आसन और कुछ हाथों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। चिह्न कछुवा का है। कुछ लेख टूट गया है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ७१

संवत् ११९९ चैत्र सुदी १३ गर्गराटान्वये साहु वाघ सुत साहु लाल साहुणीनाथ तस्य सुत साहु आल्हण।

भावार्थः –गर्गराट वंश में पैदा होने वाले शाह वाघ उनके पुत्र शाह लाल-साहुणीनाथ उसके पुत्र शाह अल्हण ने संवत् ११९९ के चैत्र सुदी १३ को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ति का शिर नहीं है। सिर्फ संवत् पढ़ा गया। बाकी हिस्सा घिस गया है। करीब १।। फुट ऊँची पद्मासन देशी पाषाणकी है।

लेख नम्बर ७२

संवत् १२१२

नोट—यह मूर्ति संवत १२१२ में प्रतिष्ठित हुई है।

मूर्ति के कुछ पैरों और आसन के सिवाय कुछ नहीं है। चिह्न कछुवा का प्रतीत होता है। करीब ३ फुट ऊँची खड्गासन है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ७३

संवत् १२१३ भट्टारकश्रीमाणिक्यदेवगुण्यदेवौ नित्यं प्रणमन्तः।

भावार्थः—भट्टारक माणिक्यदेव तथा गुण्यदेव इन्होंने संवत् १२१३ में मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का धड़ वगैरह कुछ नहीं है। सिर्फ आसन और कुछ हिस्से हाथ पैरों के हैं। चिह्न कमल का है। करीब २।। फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ७४

संवत् १२०३ आषाढ़ सुदी २ सोमे उत्राभे साहुसेल्ह भार्या सहना तस्य पुत्र उदय तस्य पाल्हण-राल्हण-नायक प्रणमन्ति।

भावार्थः—शाह सेल्ह उनकी धर्मपत्नी सहना उनके पुत्र उदय उसके पाल्हण-राल्हण नायक ने १२०३ के आषाढ़ सुदी २ सोमवार उत्तरा नक्षत्र में बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का आसन और कुछ हिस्सा हाथ-पैरोंका उपलब्ध है। लेख बीच-बीच में छिल गया है। अतः कुछ भाग पढ़ा नहीं जा सका। २। फुट ऊंची पद्मासन है। पाषाण काला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अटारी का मंदिर

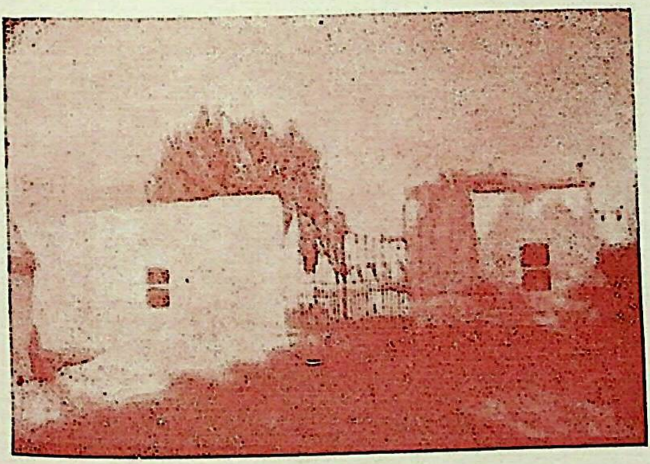

पूर्व दरवाजा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

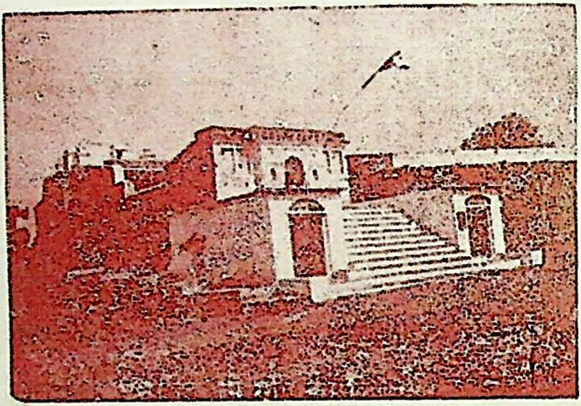

श्री शान्तिनाथ मन्दिर

मेरु मन्दिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर ७५

संवत् १२०० .....साहु श्रीहरिषेण भार्या रुद्री सुतसोमदेव माल्य-साहु-णिसारमा—प्रणमन्ति नित्यम् ।

भावार्थः—संवत् १२०० में शाह श्रीहरिषेण उनकी पत्नी रुद्री उसके पुत्र सोमदेव-माल्ह शाह णिसारमाने बिम्ब प्रतिष्ठित कराई । गोत्र की जगह 'महेशणऊ अन्वये' पढ़ा गया है ।

मूर्ति का शिर नहीं है । दाँया हाथ कुहिनी के ऊपर से टूट गया है । करीव २। फुट ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला और पालिश चमकदार है । चिह्न बैल का है ।

लेख नम्बर ७६

संवत् १२३७ मार्ग शिर सुदी ३ शुक्रे अवधपुरान्वये साहु ताहहल साहु सीले-उल्हे-साहु जाल्लू-शिवराज कीतु वाल्हे सर्वश्रेष्ठीप्रसादं भवतु—प्रणमन्ति ।

भावार्थः—अवधपुरिया वंश में पैदा होने वाले शाह ताहहल शाह सीले-उल्हेशाह जाल्लू-शिवराज-कीतु-बाल्हेने संवत् १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को प्रतिष्ठा कराई । सब सेठों को प्रसाद (प्रसन्नता) होवे ।

नोट—प्रतीत होता है कि इसकी कई श्रेष्ठिवरों ने मिलकर प्रतिष्ठा कराई है ।

मूर्ति का ऊपरी धड़ नहीं है । दाँया घुटना तथा दोनों हथेलियाँ टूट गई हैं । करीब २। फुट ऊँची पद्मासन है । चिह्न कमल का है । पालिश चिकनी है ।

लेख नम्बर ७७

संवत् १२१३ पण्डितश्री मह-वर्म्म-आर्यिका श्रीमतीशिवणी प्रणमन्ति ।

भावार्थः—पण्डित श्रीमह—वर्म्म—आर्यिका श्रीमती शिवणी ने संवत् १२१३ में बिम्ब प्रतिष्ठा कराई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह मूर्ति देशी पाषाण की है। आभूषणों आदि से मालूम होता है कि यह पद्मावती या किसी दूसरी देवी की मूर्ति है। दोनों तरफ दो देवी बैठी हैं। कुछ ऊँचे हिस्से पर दोनों तरफ पैरों के निशाने हैं, जो उसके ऊपर निर्मित मूर्ति के सूचक हैं। जो सम्भवतः पार्श्वनाथ की होगी और जो अब खंडित हो चुकी है। यह करीव २॥ फुट ऊँची खड्गासन है।

लेख नम्बर ७८

लेख—अवधपुरान्वये साहु हुस—भार्या गांगी एते नित्यं प्रणमंति संम्वत् १२१६ आषाढ़ वदी ८ सोमे।

भावार्थ—अवधपुरिया वंश में पैदा होने वाले शाहु हुसल··· उनकी पत्नी गांगी ने संवत् १२१६ के आषाढ़ वदी ८ सोम के दिन बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का पैरों के ऊपर का हिस्सा टूट गया है। यह देशी पाषाण की बनीं हुई है। पाषाण कुछ मटमैला है। चिह्न बन्दर का है। दोनों तरफ दो देवियाँ बैठी हैं। आसन से कुछ ऊपर पैरों के चिह्न हैं जो अन्य मूर्तियोंके सूचक हैं। मूर्ति खड्गासन है।

लेख नम्बर ७९

साहु भीमदेव भार्या श्रीचन्द्रवती। सम्वत् १२३७ मार्गसिर सुदी ३ शुक्रे।

भावार्थः—संवत् १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को शाह भीमदेव उनकी पत्नी चन्द्रवती ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति किसी देवी की मालूम होती है। अनुमानतः पद्मावती देवी होनी चाहिये। पाषाण देशी है। पालिश मटियाले रंग का है। पैरों के ऊपर का हिस्सा मय धड़ के नहीं है। करीब १॥ फुट खड्गासन होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नंबर ८०

गोलापूर्वान्वये साहु महिपति पुत्री हम्मा प्रणमन्तः । १२१८ ।

भावार्थ—गोला पूर्ववंश में पैदा होने वाले शाह महीपति तथा उनकी पुत्री हम्माने सं० १२१८ में यह प्रतिष्ठा कराई ।

यह मूर्ति देशी पाषाण की बनी है । चिह्न सिंह का है । करीब १॥ फुट पद्मासन हैं । पालिश कुछ मटियाले रङ्गका है ।

लेख नम्बर ८१

सम्वत् १२१३ आषाढ़ सुदी २ साहु रामचन्द्र भार्या पल्हा-प्रणमन्ति ।

भावार्थः—सं० १२१३ के आषाढ़ सुदी २ को शाह रामचन्द्र तथा उनकी पत्नी पल्हा ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई ।

मूर्ति करीब १० इञ्च के लगभग खड्गासन होगी । पाषाण देशी है । पालिश वगैरह नहीं है । चिह्न कोई नहीं है । पत्थर कुछ लाल है ।

लेख नम्बर ८२

सम्वत् १२३७ मार्ग सुदी २ शुक्रे शाहु......प्रणमन्ति नित्यम् ।

भावार्थः—यह मूर्ति सं० १२३७ के अगहनसुदी २ को प्रतिष्ठित हुई ।

नोट—मूर्ति के प्रतिष्ठापक का नाम नहीं पढ़ा जा सका ।

मूर्तिका शिर नहीं है । धड़ भी नहीं है । करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है । चिह्न बैलका है । पाषाण काला तथा चमकदार है ।

लेख नम्बर ८३

१२०७ माघ वदी ८ साहु—प्रणमन्ति नित्यम् ।

भावार्थः—संवत् १२०७ के माघवदी ७ को प्रतिष्ठित हुई ।

नोट—प्रतिष्ठापक का नाम वंश वगैरह घिस गया है । अतः पढ़ा नहीं गया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ति का सिर्फ एक टाँग को छोड़कर बाकी हिस्सा नहीं है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ८४

संवत् १२१० वैशाख सुदी १३ गृहपत्यन्वये साहुकुलधर सुत......

भावार्थः—गृहपति वंश में पैदा होने वाले शाह कुलधर उनके पुत्र.....ने संवत् १२१० के वैशाख सुदी १३ को इस प्रतिबिम्ब की प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का सिर्फ आसन का टुकड़ा उपलब्ध है। लेख में सिर्फ संवत् पढ़ा जा सका। बाकी हिस्सा टूट गया है। पाषाण काला है।

लेख नम्बर ८५

संवत् १२२५......... ....।

भावार्थः—इस मूर्ति की प्रतिष्ठा संवत् १२२५ में हुई।

मूर्ति का शिर नहीं है। तथा धड़का दायाँ भाग नहीं है। अतः लेख आधा ही मिल पाया। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा पालिश चमकदार है। चिह्न बैल का है।

लेख नम्बर ८६

संवत् १२०९ वैशाखसुदी १३...........।

पंडित विक्रमशिष्येन ठक्कुरददेसुतेन पद्मसिहेण पुण्याय कारापितेयम्।

भावार्थः—पण्डित विक्रम के शिष्य ठक्कुर ददे उनके पुत्र पद्मसिहने संवत् १२०९ के वैशाख सुदी १३ को प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का सिर नहीं है। आसन विशाल है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है। चिह्न नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर ८७

सं० १२०७ माघवदी ८ बाणपुरे गृहपत्यन्वये कोच्छल गोत्रे साहुरुद्र-तत्सुता: पाभ्भिण मोल्लाया तथा साहु माहवली रैंमले पुत्र हरिषेण भ्भिणे-तत्सु कारापितेयं नित्यं प्रणमन्ति ।

भावार्थ:—बानपुर में गृहपति वंश में पैदा होने वाले कोच्छल गोत्रमें शाह रुद्र उनके पुत्र पाभ्भिण मोल्लया और शाह माहवली रैंमले पुत्र हरिषेण उनके पुत्र भ्भिणेने इस प्रतिबिम्ब की १२०७ के माघ वदी ८ को प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति का तमाम हिस्सा टूट गया है। सिर्फ कुछ भाग बचा है। उसी से कुछ लेख लिया गया है। मूर्ति की अवगाहना क़रीब १॥ फुट रही होगी। पद्मासन है। काला पाषाण है। पालिश चमकदार है।

लेख नम्बर ८८

सं० १२१३ सिद्धा·तीदेवस्त्री सा·········।

भावार्थ:—मूर्ति के प्रतिष्ठापक सिद्धान्तीदेवश्री हैं। इन्होंने संवत् १२१३ में बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

यह लेख वेदिका से लिया गया है। वेदिका देशी पाषाण की बनाई गई है, जो कुछ पीला रुख लिये है। इसकी तीन कटनी हैं। हरएक कटनी में कंगूरेदार काम है। ऊपरी हिस्से में जलधार का जल बाहर जाने के लिये टोंटी है। अनुमानतः अभिषेक के लिये ही वेदी बनाई गई थी।

लेख नम्बर ८९

(नीचे) सं० १२१३ आषाढ़ सुदी २ सोमदिन गृहपत्यन्वये कोच्छल्लगोत्रे बाणपुरवास्तव्य तद सुतमाहवा पुत्र हरिषेण उदइजलखू-विंग्रदू प्रणमन्ति नित्यम् ।

(ऊपर) हरषेण पुत्र हाडदेव पुत्र महीपाल गंसवसबचन्द्रलाहदेव माहिश्चन्द्र सहदेव एते प्रणमन्ति नित्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—गृहपति वंश के कोछल गोत्र में पैदा होने वाले वाणपुर निवासी शाह तद उनके पुत्र माह्वा उनके पुत्र माले उनके पुत्र हरिषेण-उदइ जलखू-विभ्रइने संवत् १२१३ के आषाढ़ सुदी २ सोमवार को प्रतिष्ठा कराई।

(ऊपरी भाग में)

हरिषेण उनके पुत्र हाडदेव उनके पुत्र महीपाल गांसव-सव-चन्द्र-लाहदेव-महिचन्द्र-सहदेव ये प्रणाम करते हैं।

यह मूर्ति पीतल की बनी हुई है। करीब ६ इञ्च पद्मासन होगी। चिह्न की जगह कुछ नहीं।

लेख नम्बर ६०

संवत् १८६१ वैशाखशुक्लपंचम्यां सोमवासरे श्री० मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाम्नाये श्रीजिनप्रतिमा प्रतिष्ठितेयं। गोलापूर्ववंशे पड़ेले सिघई बाजुराय तस्य पुत्र दोय चन्द्रभान-साकरायन नित्यं प्रणमन्ति।

भावार्थः – संवत् १८६१ के वैशाख सुदी पञ्चमी सोमवार को श्रीमूलसङ्घ-वलात्कारगण में सरस्वतीगच्छ में श्रीकुन्दकुन्दाम्नाय में यह श्रीप्रतिमा प्रतिष्ठित हुई।

गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले पड़ेले सिघई बाजुराय उनके पुत्र दो चन्द्रभान-सायकरायन प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।

यह मूर्ति सर्वाङ्ग सुन्दर है। पीतल की बनाई गई है। करीब ६ इञ्च ऊँची पद्मासन है। चिह्न सर्प का है।

लेख नम्बर ६१

संवत् १८८१ शुभवृषे नाम फाल्गुन सुदी ३ सोमवासरे ग्राम अहामरमैंये सकल पञ्चान प्रणमन्ति।

भावार्थः—ग्राम अहारवासी सकलपञ्चों ने संवत् १८८१ के फागुन सुदी ३ सोमवार को बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह प्रतिमा पीतल की बनी है। सर्वाङ्गसुन्दर है। करीब २ इञ्च ऊँची पद्मासन है। चिह्न सर्प का है।

लेख नम्बर ९२

संवत् १६९३ म १ महसह।

भावार्थ—यह प्रतिमा संवत् १६९३ में प्रतिष्ठित हुई।

यह प्रतिमा सर्वाङ्ग सुन्दर है। पीतल की बनी हुई है। करीब ३ इञ्च पद्मासन होगी। चिन्ह सर्प का है।

लेख नम्बर ९३

संवत् १७२५ वर्ष अगहन बदी ५ ...।

भावार्थ—सं० १७२५ के अगहन वदी ५ को बिम्ब प्रतिष्ठा हुई।

मूर्ति धातु से बनी है। सर्वाङ्ग सुन्दर है। करीब १ इञ्च ऊँची पद्मासन है। चिन्ह नहीं है।

लेख नम्बर ९४

संवत् १६७१ वैशाख सुदी ५।

भावार्थ—संवत् १६७१ के वैशाख सुदी ५ को बिम्ब प्रतिष्ठा हुई।

यह मूर्ति पीतल की बनाई गई है। करीब २ इञ्च पद्मासन है। चिह्न सर्प का है।

लेख नम्बर ९५

सं० १६८८ फागुन सुदी ८ भ. जगन्द्रषेण।

भावार्थ—भ० जगन्द्रषेणने संवत् १६८८ के फागुन सुदी ८ को प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति सफेद पाषाण की है। मूर्ति सर्वाङ्ग सुन्दर है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। चिह्न वगैरह कुछ नहीं है। लेख प्रायः घिस चुका है। कुछ हिस्सा पढ़ा जा सका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेख नम्बर ९६

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी १२........

भावार्थ—संवत् १५४८ के वैशाख सुदी १२ को बिम्ब प्रतिष्ठा हुई।

यह मूर्ति सर्वाङ्ग सुन्दर है। सफेद पाषाण की बनी हुई है। चिह्न कमल का है। करीब १ फुट ऊँची पद्मासन है।

लेख नम्बर ९७

संवत १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ भौमे संघ भट्टारक श्रीजिनचन्द्र-देव साहु जीवराज पापकोवर एते प्रणमन्ति।

भावार्थ—भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेव वा शाह् जीवराज-पाप-कोवर ने संवत् १५४८ के वैशाख सुदी ३ मंगलवार को बिम्ब-प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति सर्वाङ्ग सुन्दर है। पाषाण देशी है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है। चिह्न सर्प का है।

लेख नम्बर ९८

संवत् १८६६ अगहन सुदी ७ भौमे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्य-आम्नाये चौधरी..... ......तस्य पुत्र चौधरी गनेश प्रणमन्ति।

भावार्थ—श्रीमूलसंघ, वलात्कारगण, सरस्वती गच्छ कुन्दकुन्द आम्नायमें पैदा होने वाले......उनके पुत्र चौधरी गनेश ने संवन् १८६६ के अगहन सुदी ७ मंगलवार को प्रतिष्ठा कराई

यह मूर्त्ति सर्वाङ्ग सुन्दर है। पाषाण सफेद है। करीब १॥ फुट पद्मासन है। चिह्न सर्प का है।

लेख नम्बर ९९

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी १३......

भावार्थ—संवत् १५४८ के वैशाख सुदी १३ को यह बिम्ब प्रतिष्ठित हुई।

नोट:—लेख घिस गया है। अतः पूरा पढा नहीं गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

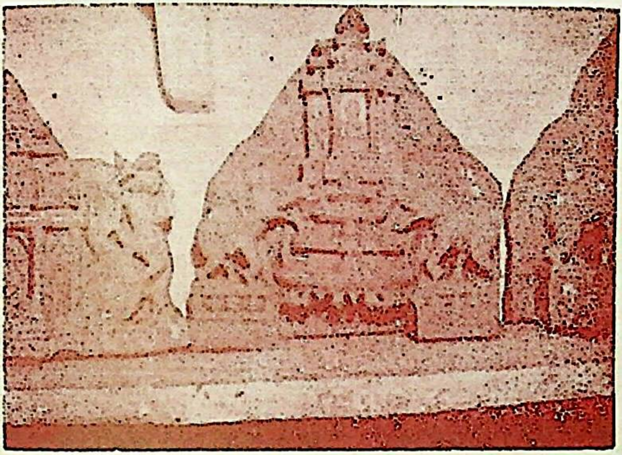

प्राचीन मूर्ति

कीटे का सरोवर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

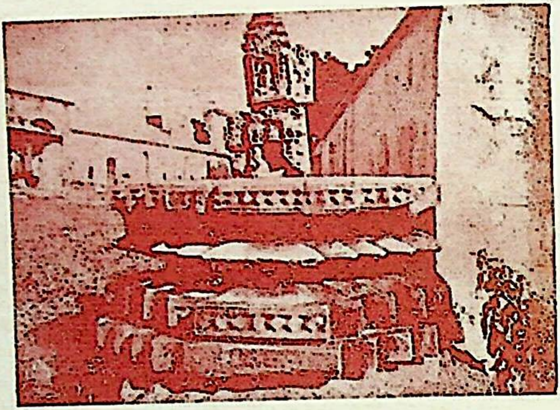

प्राचीन वेदिका

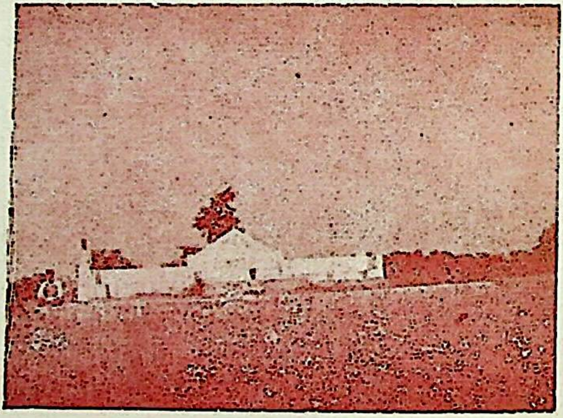

गजरथ वेदिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्तिका शिर नहीं है। पाषाण काला है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। चिह्न बैलका है। पालिस चमकदार है। संवत् का कुछ भाग टूट गया है। बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है।

लेख नंबर १००

संवत्...६६ महिषणपुर पुरवाडान्वये साहु श्रीलाखणसुत श्रीबठई भार्या साऊ जसकरी सुत साहु प्रणमन्ति।

भावार्थः—संवत्...६६ (११६६?) में पुरवाल वंशोत्पन्न शाह श्री लाखण उनके पुत्र बठई उसकी पत्नी यशकरी उसके पुत्र साहूने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्त्तिका शिर नहीं है। शिलालेख के अक्षर प्रायः मिल गये हैं। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन होगी। पाषाण काला और चमकदार है। चिह्न बैलका है।

लेख नंबर १०१

श्री गोलापूर्वान्वये साहुश्री—साहुलंकके एतयोः सुत साहुश्री-देवचन्द्र...अस्य सुत सीले एते प्रणमन्ति नित्यम्। सं० १२०३।

भावार्थः—गोलापूर्व वंश में पैदा होने वाले शाह श्री तथा शाह लंकके इन दोनों पुत्र शाह देवचन्द्र उनके पुत्र शीलेने संवत् १२०३ में विम्ब प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्त्ति भी शिरसे खण्डित है। पाषाण काला तथा चमकदार है। चिह्न सिंह का है। करीब ३ फुट पद्मासन है।

लेख नंबर १०२

संवत् १२०७ अषाड़ वदी ६ शुक्रे श्री वीर वर्द्धमानस्वामि प्रतिष्ठापितो गृहपत्यन्वये साहु श्रीराल्हणश्चतुर्विधदानेन—पठलितविमुक्तसुखशीतल लकंप्रवर्द्धितकीर्त्तिलतावगुण्ठितब्रह्मा ण्डं.........तत्सुत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीअल्हस्तथा तत्सुत साहु मातनेन पौरवालान्वये साहुवासलस्तस्य दुहिता मातिणी साहुश्री महीपति तत्सुत साहु......तत्सुत सीढू एते नित्यं प्रणमन्ति। मंगलं महाश्री।

भावार्थः—श्री वीर वर्द्धमान स्वामीकी प्रतिष्ठा कराने वाले-गृहपति वंशमें पैदा होने वाले शाह श्री राल्हण हैं। जिनकी कीर्ति चार प्रकारके दानसे इतनी प्रवर्द्धित हुई कि ब्रह्मांड भर गया। ऐसे राल्हणके पुत्र श्रीअल्ह तथा उनके पुत्र शाह मातनने संवत् १२०७ के आषाढ़ बदी ९ शुक्रवारको प्रतिष्ठा कराई। तथा पौरवाल वंशमें पैदा होने वाले शाह बासल उनकी पुत्री मातणी तथा शाह श्रीमहीपति उनके पुत्र शाह ...उनके पुत्र सीढू ये प्रतिदिन प्रणाम करते हैं। महालक्ष्मी मंगल करे।

मूर्तिका शिर नहीं है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा पालिस चमकदार है। चिह्न बैलका है।

लेख नंबर १०३

संवत् १२०३ .... सुदी १३......जसकर तत्सुत जसरा तत्पुत्र नायक श्रीराल्हण तत्सुत श्रीजसोधर एते नित्यं प्रणमंति।

भावार्थः—संवत् १२०३ के .... सुदी १३ को शाह यशकर उनके पुत्र यशराज उनके पुत्र नायक श्रीराल्हण उनके पुत्र श्री यशोधरने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

मूर्तिका शिर नहीं है। पाषाण देशी है। करीब १। फुट ऊँची पद्मासन है। चिह्न हिरणका है। पालिश मटयाला है। लेख कुछ अंशों में घिस गया है।

लेख नं० १०४

संवत् १३२० फागुन सुदी १३ शुक्रे......साह, मदन भार्या रोहणी सुत घूने भार्या देवा तत्पुत्र माधव भार्या बाल्हिणी प्रणमन्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थः—श्रीमदन उनकी पत्नी रोहणी उनके पुत्र घूने उसकी पत्नी देवा उसके पुत्र माधव उसकी पत्नी बाछिणीने संवत् १३२० के फाल्गुन सुदी १३ को प्रतिष्ठा कराई।

मूर्ति देशी पाषाणकी वनी हुई है। करीब १॥ फुट ऊँची पद्मासन है मूर्ति शिरसे खण्डित है। चिह्न चन्द्रका है।

लेख नंबर १०५

संवत् १३३२ आषाढ़ बदी २ साहुपट्टु .. पुत्र सार्यहृद भार्या मालिणी प्रणमंति नित्यम्।

भावार्थः—शाह पट्टु उनके पुत्र सार्यहृद उनकी पत्नी मातिणी ने संवत् १३३२ के आषाढ़ बदी २ को प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति करीव २ फुट ऊँची पद्मासन है। काले पाषाणसे बनी है। पालिस चमकीली है। मूर्ति शिरसे खण्डित है। चिह्न शेरका है।

लेख नंबर १०६

पण्डितश्रीगंगवर तस्य भार्या जागलवती सुत मांगलदेव श्रीवीर-नाथं प्रमणमन्ति नित्यम्। संवत् १२०३ माह वदी २।

भावार्थः — पंडित श्री गंगवर उनकी पत्नी जागलवती उसके पुत्र मांगलदेव श्री वीरनाथको संवत् १२०३ के माघवदी २ को प्रतिष्ठा कराके प्रणाम करते हैं

यह मूर्ति देशी पाषाण से बनी हुई है। करीब १ फुट ऊँची पद्मासन है। चिह्न सर्पका है। पालिस कुछ काला है। ग्राम नारायणपुरके मंदिरमें नं० ११ से लेकर १६ तक विराजमान हैं।

लेख नंबर १०७

संवत् १७१३ वर्षे मार्गशिर सुदी १० रबऊ भट्टारकधवलकीर्ति ... . प्रणमंति नित्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ:—श्री भट्टारक धवलकीर्त्ति और भट्टारक श्रीसकलकीर्त्तिने संवत् १७१३ के अगहन सुदी १० रविवारको प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति पीतलसे निर्मित है। करीब ४ इञ्च ऊँची पद्मासन है। चिह्न सर्पका है।

लेख—नंबर १०८

संवत् १५२४ वर्षे बदी १ शुक्रे दिने गोलापूर्ववंशे बलई तस्य भार्या पन्ना प्रणमति।

भावार्थ:—गोलापूर्व वंशोत्पन्न श्री वलई उनकी पत्नी पन्नाने संवत् १५२४ के बदी १ शुक्रवारको प्रतिष्ठा कराई।

यह मूर्ति सफेद पाषाणकी बनी है। करीब ६ इञ्च ऊँची पद्मासन है। चिह्न कमलका है।

लेख नंबर १०९

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ भट्टारक श्री जिनचंद्र...

....

भावार्थ:—भट्टारक श्रीजिनचंद्र ने संवत् १५४८ के वैशाख सुदी ३ को प्रतिष्ठा कराई।

नोट—लेख के अक्षर घिस गये हैं। अतः वह पूरा पढ़ा नहीं गया।

यह मूर्ति देशी पाषाणकी बनी है। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। चिह्न शेर का है।

लेख नंबर ११०

शाह श्री नवल पुत्र नल संवत् ११३१ मय।

भावार्थ— संवत् ११३१ में शाह श्री नवल उनके पुत्र नल ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

नोट—उपलब्ध लेखोंमें यह दूसरा प्राचीन मूर्ति लेख है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह मूर्ति भी खण्डित है। सर्वाङ्ग सुन्दर है।

लेख नंबर १११

संवत् १२३७ मार्ग सुदी ३ शुक्रे गोलापूर्वान्वये साह राल्हण तस्त.... प्रणमन्ति।

भावार्थ.—संवत् १२३७ के अगहन सुदी ३ शुक्रवार को गोलापूर्व वंशमें पैदा हुए साह राल्हण उसके.... ने बिम्ब-प्रतिष्ठा कराई। ये सब प्रणाम करते हैं।

लेख नंबर ११२

जैसवालान्वये साहु मोतीकांत भार्या माहण प्रणमन्ति नित्यम्।

भावार्थः—जैसवालवंशोत्पन्न शाह मोतीचन्द्र उनकी पत्नी माहण प्रणाम करते हैं।

यह मूर्ति श्री शान्तिनाथ स्वामी के दक्षिण अङ्ग में खड्गासन है। ११ फुट ऊँची है। चिह्न मछली का है। आसमानी रंग वाले पाषाण की बनी हुई है।

लेख नंबर ११३

ॐ ह्रीं अनंतानन्त परम सिद्धेभ्यो नमः

श्रीमत्परम गम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन शासनम् ॥१॥
प्राग्योऽभूनृपतिर्महान् धनपतिः पश्चाद्वृत्तानांपतिः।
स्वर्गाग्रे विल सज्जयन्त जपतिः प्रोद्यत्सुखानां पतिः॥
षट्खण्डाधिपत्तिश्चतुर्दशलशदे रत्नैर्जि घीनांपतिः।
त्रैलोक्याधिपतिः पुनात्वरपतिः सन्संश्रितान् वाश्चिरम् ॥२॥

विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां रवि-वासरे, स्वतंत्र भारत गण राज्ये टीकमगढ़ मण्डलाऽन्तर्गते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहार क्षेत्रे गजरथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठाप्य श्रीमदर नाथ जिनेन्द्रं प्रान्तीया समस्त अपिजैनाः नित्यं प्रणमति ।

यह मूर्ति श्वेत संगमरमर पाषाण की ६ फुट ऊँची है, श्रीमद्‌वाहूवलि स्वामी की है ।

लेख नंबर ११४

ॐ ह्रीं अनंतानन्त परम सिद्धेभ्योनमः

श्रीमत्परम गम्भीर स्यद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथय शासनं जिन शासनम् ।।१।।
सकल नृप समाजे दृष्टि मल्लाम्बु युद्धे ।
विजित भरत कीर्तियं प्रव व्राज मुक्त्यै ।।
तृणमिव विग गण्य प्राज्य साम्राज्य भारं ।
चरम तनु धराणा मग्रणीः सोवताऽद्‌वः ।।२।।

विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पंचम्यां रविवासरे स्वतंत्र भारतगण राज्ये टीकमगढ़ मण्डलाऽन्तर्गते श्रीमूलसंघे कुन्द कुन्दाचार्याम्नाये सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे अहार क्षेत्रे गजरथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठाय लार ग्राम निवासिनो पूर्वान्वये सांधे लीया गोत्रे दिवंगत सिंघई मोतीलालस्य धर्मपत्नी गणेशीबाई तस्यात्मज हरप्रसाद, मौजीलालाभिधौ पौत्रश्चिरंजीव कुन्दनलाल इत्येतैः श्रीमद् वाहूवलि स्वामिनं नित्यं प्रणमति ।

लेख नम्बर ११५ (श्रीमहावीर स्वामी) पाषाण मूर्ति

ॐनमः सिद्धेभ्यः श्री कुन्दकुन्दाम्नाये मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्रीवीर निर्वाण सं० २४८४ विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला चतुर्थ्यां मोदी धर्मदास तस्यात्मज नाथूराम फुटेर निवासी पखार जाति वैशाखिया भूरेगोयल्लगोत्रे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११३)

सिद्ध भगवान्

श्र वीर नि० सं० २४८७ फाल्गुण कृष्ण ८ बुधे महरोनी गजरथ प्रतिष्ठायां दिगम्बर जैन गोलापूर्व ब्र० पं० मूलचंद्र तस्यात्मज पं० कन्छेदीलाल साँघेले तेन्दू खेड़ा द्वारा प्रस्थावति ।

(११७)

सिद्ध भगवान्

ॐनमः सिद्धेभ्यः श्री कुं० कु. आ० मू० सा. वि. सं० २४८४ फाल्गुण शुक्ला ४ अहार क्षेत्रे पंचकल्याणक गजरथ प्र० गोलापूर्व पटवारी भगवानदास खरगापुर मंदिरे स्वस्थापितम् ।

(११८)

श्री शान्तिनाथ स्वामी (धातुमूर्ति)

'० २०१४ फाल्गुण शुक्ला ४ शनि अगानौर ग्राम गोलापूर्व सांधेलीय गोद्भव श्री सिं गोविन्ददास नित्यं प्रणमति ।

(११९)

श्रीशान्तिनाथाय (धातुमूर्ति)

ॐनमो वीतरागाय । वीर निर्वाण संवत् २४८४ विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला पंचम्यां रविवासरे मूलसंघे कुन्द-कुन्दाम्नाये सरस्वती गच्छे बलात्कारणे गोलापूर्व जात्यंतर्गत सांघेलीय वन्शोद्भव सिं० पंखूलालात्मज वै० भू० प्रतिष्ठाचार्य पं० ब्र० पं० मूलचंदजी तस्यात्मज पं०कन्छेदीलाल जी तस्यात्मज दिनेशकुमार नि० हीरापुर श्री अहार पंचकल्याणक गजरथ प्रतिष्ठा प्रतिष्ठाप्य नित्य प्रणमन्ति ।

(१२०)

श्री महावीर भगवान (धातु मूर्ति)

ॐनतः श्री कुन्द कुन्दाम्नो ये मूलसंघे सरस्वती गच्छे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वलात्कार गणे वीर निर्वाण सं० २४८४ फाल्गुण शुक्ला ४ श्रीअहार क्षेत्रे गजरथ ।पंचकल्याणक प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठाप्य, प्रतिष्ठाचार्यं पं० सिद्धसागर, पं० मूलचंद, पं० नन्हैलाल पं० दयाचंद पं० पन्नालाल, पं० गुलाबचंद, स० सिं० देशराजात्मज सेठ हीरालाल नस्यात्मज दीपचंद , अनंदीलाल निवासी हटा नित्यं प्रणमति ।

(१२१)

धातुमूर्ति

विक्रम सं० २०१४ फाल्गुण शुक्ला चतुर्थ्यां शनिवासरे मूल संघे कुंदाकुन्दाभ्याये सरस्वती गच्छे । वलात्कार गणे । टीकमगढ़ मण्डलाऽन्तर्गत पठा ग्रामवासी दि० जैन धर्म प्रतिपालक गोलापूर्व जात्यंतर्गते पांडोलीय वन्शोद्भव ब्रह्मचारी सेठ चिम्मनलाल तस्यात्मज सेठ चतुराप्रसाद दयारामो पुत्रा. ऋषभचंद महेन्द्रकुमार सुमतचंद वीरेन्द्र कुमार। दयो श्री अहार क्षेत्रे गजरथ पंचकल्याण्यक प्रतिष्ठा यां प्रतिष्ठाप्य श्री चन्द्र प्रभु नित्यं प्रणमति ।

(धातु मूर्ति)

(१२२)

ॐ नमो वीतरागाय, स्वस्ति श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्योदय संवत् २०१४ फाल्गुण मासे, शुक्लपक्षे, पंचभ्यां रविवासरे मूल संघे कुन्दकुन्दाम्नाये सरस्वती गच्छे, वलात्कारणे, टीकमगढ़ मण्डलाऽन्तर्गत पठा ग्राम निवासिभिः दि० जैन धर्म प्रतियालक गोलापूर्व जात्यन्तर्गत पांडेलीय वंशोद्भव सिं. गुलाब चंद्रा वैद्यस्तस्यात्मज वैद्यरत्न पं० भगवानदास तस्यात्मज तीर्थभक्तशिरोमणि राजवैद्य पं० वारेलाल तस्य धमपत्नी सौ० सुन्दर बाई तयोः पुत्राः डाक्टर कपूरचंद B. I. M.S. । वैद्य विशारद बाबूलाल, डा० राजेन्द्रकुमार B. I. M. S. जयकुमार, देवेन्द्र-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुमार, सुरेन्द्र कुमार पोत्र अशोककुमारादयः अशुभ कर्मक्षयार्थं श्रीअहार क्षेत्रे गजरथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठाप्य श्री शान्तिनाथ जिनविम्बं नित्यं प्रणमति ।

(१२३)

(धातु मूर्ति)

(श्री आदिनाथ भगवान)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः वीरनिर्वाण सं० २४८४ विक्रम संवत् २०१४ फाल्गुण शुक्ला चतुर्थ्यां शनिवासरे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे टीकमगढ़ मण्डलाऽन्तर्गत बैसा ग्राम वासि दि० जैन धर्म प्रतिपालक गोला पूर्व जात्यन्तर्गत खागवंशे सेठ छोटे लाल तस्य कत्तक पुत्र धनप्रसाद तस्यात्मज वीरेन्द्र कुमारा शुभकर्मक्षयार्थं श्री अहार क्षेत्रे गजरथपच कल्याणक प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठाचार्य ब्र० पं मूलचंद्र हीरापुर प्रतिष्ठाप्य श्री शांतिनाथ जिनविम्बं नित्यं प्रणमति ।

मूर्ति पाषाण की खंडित पार्श्वनाथ की सफेद पाषाण की १॥ फुट करीब है ।

लेख नम्बर १२४

संवत् १८९६ ज्येठ बदी ६ सिं० सवसुख तस्य पुत्र ४ बड़े परमानंद कमलापत कस्तूरचन्द तस्य पुत्र नंदन आगे पढ़ा नहीं जाता ।

यंत्र २१ हैं तामे व पीतल के—

विनायक ३	रत्नत्रय २	धर्मचक्र १
दशलक्षण १	कल्याणसार	सोलह कारण २
सिद्धचक्र २	श्रुतस्कंध १	सर्वसिद्धि १
चौंसठऋद्धि १	नयनोन्मीलन १	त्रैलोक्यसार १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्वाणसंपत्कर १ नोक्षमार्ग १ पूजासार १
वर्धमान १

यह एक तांबे का षोडशकारण यन्त्र है। थाली की तरह गोल है। उसमें एक लेख है जो नीचे दिया जाता है —

लेख —

संवत् १७२० वर्षे फागुन सुदी १० शुक्र व. स. कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारकश्रीसकलकीर्त्तिउपदेशात् गोलापूर्वान्वये गोत्रपैंथवार पं० परवति तत्सुत-ज्येष्ठ-डोंगरूपाक-विशुन-उग्रसेन नित्यं प्रणयन्ति सिं० खरगसेन के यन्त्र में यन्त्र प्रतिष्ठितं।

भावार्थ:—गोलापूर्व पैंथवार वंश में पैदा होने वाले पण्डित परवत उनके पुत्र डोंगर-पाक-विशुन-उग्रसेन ने कुन्दकुन्दाचार्य की आम्नाय में हुए भट्टारक सकलकीर्त्ति के उपदेश से संवत् १७२० के फागुन सुदी १० को सिंघई खरगसेन के यन्त्र में यन्त्र प्रतिष्ठा कराई।

यह एक तांबे का चौकोर यन्त्र है। इसमें निम्नलेख उत्कीर्ण है—

लेखनम्बर १२५

संवत १६४२ फागुन सित १० गुरौ भृगे श्रीअवरजलालदजराज्ये पैरोजाबादे श्रीमूलसंघ बलात्कारगने सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारकश्रीधर्मकीर्त्तिदेवतापट्टे श्री भट्टारकशील सूत्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीज्ञानसूत्रनदेवास्तदाम्नाये श्रीहिरउ पुत्रौ २ दोहिनमरू सत्र दौदि भार्याप्रभा तत्पुत्रा: ५ लोह-तत्र-लोह-गुसधरणीधर भार्या।

भावार्थ:—सं० १६४२ के फागुन सुदी १० वृहस्पतिवार को श्रीअवरलाल दजके राज्यमें पैरोजाबादमें श्री मूलसंघ बलात्कार-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गण सरस्वतीगच्छ कुन्दकुन्दाचार्य की आम्नायमें भट्टारक श्रीधर्म-कीर्तिदेव उनके पट्टाधिकारी भट्टारक श्री शीलसूत्रदेव उनके पट्टा-धिकारी ज्ञानसूत्रदेव उनकी परम्परामें पैदा होनेवाले शाह श्री हिरउ उनके पुत्र २ दौदि नमरू उनमें से दौदि की धर्मपत्नी प्रभा उसके पुत्र लोहतत्रलोह-गुप्त-धरणीधर उसकी पत्नी......ने यंत्र प्रतिष्ठित कराया।

यह यन्त्र चौकोर ताँबा का बना हुआ है। इस पर निम्न लेख अङ्कित है—

लेख नम्बर १२६

कल्पनातिगता बुद्धिः परभावाविभाविका।
ज्ञानं निश्चयतो ज्ञेयं तदन्यव्यवहारतः॥

संवत् १५०२ वर्षे कार्तिक ५ भौमदिने श्रीकाष्ठासंघे भट्टारक श्रीगुणकीर्ति तत्पट्टे श्रीयशकीर्तिदेव तत्पट्टे श्रीमलैकीर्तिदेवान्वये साहु बरदेवास्तस्य भार्या जैणी तयोः पुत्र साहु रूपचंद्र द्वितीय पुत्र साहु बिहराज तस्य भार्या साहु हांसो साहु बरदेव भ्रात, साहु, रूपचंद तस्य पुत्र साहु नानि द्वितीय समननानि पुत्र आढू प्रतिष्ठतम्।

भावार्थः—काष्ठासंघ में भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेव उनके पट्ट पर बैठनेवाले यशकीर्तिदेव उनके पट्टाधिकारी श्री मलैकीर्तिदेव उनकी परम्परा में होनेवाले साहुवरदेव उनकी पत्नी साध्वी जैणी उन दोनों के पुत्र साहु रूपचंद्र द्वितीय पुत्र साहु विहराज उनकी पत्नी हांसो साहु वरदेव उनके भाई साहु रूपचंद्र उसके पुत्र साहु नानि दूसरे समननानि उनके पुत्र आढू ने संवत् १५०२ के कार्तिक सुदी ५ मंगल को इस यन्त्र की प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह यन्त्र तांबे का गोल है। उसमें यह लेख लिखा है—

. लेख नंम्वर १२७

संवत् १६८३ के फाल्गुन सुदी ३ श्रीधर्मकीर्तिउपदेशात् संमुकुट भा० किशुन पुत्रमोदन-श्याम-रामदास-नन्दराम सुखानन्द-भगवानदास पुत्रआसा-जातसिरा - रामदामोदर - बिरदेराम-किशुनदास - वैशाखनन्दन परवार एते नमन्ति।

भावार्थः—संवत् १६८३ के फाल्गुन सुदी ३ श्रीधर्मकीर्त्तिके उपदेश से संमुकुट भा० किशुन उनके पुत्र मोदन-श्याम-रामदास-नन्दराम-सुखानन्द-भगवानदास भगवानदासके पुत्र आशाजात-शिरा-रामदामोदर-विरदेराम-किशूनदास वैशाखनंन्दन. इन्होंने इसकी प्रतिष्ठा कराई। सब इस यंत्रको नमस्कार करते हैं।

यह यंत्र पीतलका है। गोलाकार है। लेख भी अंकित है।

लेख नंम्बर १२८

त् १६६७ मार्गशिर शुक्ल १ बुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारवे कुन्दकुन्दाचार्य भठारक श्रीविशालकीर्त्तिस्तत्पटे भट्टारक श्रीपद्मकीर्त्ति तयोः उपदेशातजांती सोहितवान भार्या निवा-भागा तयोः पु। यांदोंजी भार्या देवा प्रणमन्ति।

भावार्थः—संवत् १६०७ के अगहन सुदी १० बुधबार को श्रीमूलसंघ के सरस्वतीगच्छ व वलात्कारगण में कुन्दकुन्दाचार्य की आम्नायमें होने वाले भट्टारक विशालकीर्ति उनके पट्टपर बैठने वाले भठारक श्रीपद्मकीर्ति इन दोनोंके उपदेशसे शाह जांती सोहतवान उनकी पत्नी निवा-भागा इन दोनोंके यादोंजी उनकी पत्नी देवाने यत्र की प्रतिष्ठा कराई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीशान्तिनाथ आरती

रचयिता—श्री पं० ज्ञानानन्द जी, टीकमगढ़ (म० प्र०)

जय शान्तिनाथदेवा, ॐ जय शान्तिनाथदेवा ।
सुरनर ईश करें, प्रभु तुम चरणन सेवा ।। ॐ जय० ।।

विश्वसेन ऐरा देवीग्रह, जन्म लियो सुखकार ।
इन्द्र शची सुर आये, उत्सव कियो अपार ।। ॐ जय १ ।।

जन्मत ही त्रयज्ञान विराजित, स्वयं बुद्ध भगवान ।
अतुलित तन बलधारी, कंचन वरन सुजान ।। ॐ जय २ ।।

राजतंत्र कर चक्र धारि, षटखंड विजय कीना ।
राज श्रीयुत राजित, चक्रीपद लीना ।। ॐ जय ३ ।।

अतिशय सुंदरि रूप अनूपम, सुरनर मन हारी ।
परम शान्ति मुद्रायुत, मदन सुपद धारी ।। ॐ जय ४ ।।

धर्मतीर्थं प्रकटावन कारण, तीर्थंकर नामी ।
पदवी त्रय धारक जिन, नमहुँ शान्ति स्वामी ।। ॐ जय ५ ।।

दर्पणमुख अवलोकि निमितकरि उरविराग लीना ।
राजपाट तज तृणवत, सिद्ध नमन कीना ।। ॐ जय ६ ।।

यति संयम धरि दुर्द्धर तपकरि, ध्यान चक्र लीया ।
मोहवली क्षय करके, वोधि लाभ कीया ।। ॐ जय ७ ।।

भवि भागन वच योग निमित, धर्मोपदेश दीना ।
पुनि अघाति अरि क्षयकरि, अक्षयपद लीना ।। ॐ जय ८ ।।

शांतिनाथ प्रभु की आरति जो, पढ़े शान्ति मन से ।
रोग शोक अघ नाशे, दुखदारिद विनशे ।। ॐ जय ९ ।।

ज्ञानानंद भक्त कर जोरें, करहि विनय शिरनाय ।
देहु शान्ति अक्षय प्रभु, भववन फिर न मिटाय ।। ॐ जय १० ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धान्ताचार्य पं. ... श्री स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी द्वारा भेंट

आवश्यक निवेदन

महानुभाव ! अहार क्षेत्र वास्तव में मनुष्यों का अत्यन्त शान्तिपू मानसिक आहार है। अन्नाहार के द्वारा तो कुछेक क्षण को ही शान्ति प्राप होती है लेकिन अहारक्षेत्र स्थित १८ फुट उत्तुङ्ग विशालकाय श्री १०० भगवान शान्तिनाथ की भव्य मूर्ति के दर्शनोपनीत आहार से तो भव-भवान्तर में शान्ति प्राप्त होती है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत चार संस्थाएँ हैं यथा-

१—क्षेत्रीय विभाग—जो ३१ वर्ष से एक प्रवन्धकारिणी कमेटी के द्वार संचालित है। क्षेत्र की सुरक्षा का कार्य तत्परता से किया जा रहा है।

२—श्री शान्तिनाथ दि० जैन संस्कृत विद्यालय—भारत के पूज्य संत श्री १०५ क्षुल्लक गणेशप्रसाद जी वर्णी द्वारा सन् १९३६ में स्थापित हुआ था। सैकड़ों छात्र उच्चतम ज्ञान प्राप्त कर समाज सेवा कर रहे हैं।

३—श्री शान्तिनाथ दि० जैन अखिल भारतवर्षीय व्रती विद्यालय—जो पू० १०५ क्षुल्लक चिदानन्द जी, पूज्य १०५ क्षुल्लक पूर्ण सागर जी महाराज द्वारा सन् १९५८ में श्रीमज्जिनेन्द्र पञ्चकल्याणक विम्व प्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव के समय स्थापित हुआ था। जिसमें अनेक त्यागी वर्ग धर्म साधन और ज्ञानार्जन करते रहते हैं।

४—श्रीशान्तिनाथ दि० जैन मैदाललिता महिलाश्रम सन् १९६० में श्री मैदावाई एवं श्री ललितावाई द्वारा स्थापित हुआ था इसमें महिला वर्ग को सुशिक्षित व धार्मिक जीवन वनाने का उत्तम साधन है।

इस परम पावन तीर्थ पर उक्त संस्थाओं का संचालन सोने में सुगंध की कहावत को चरितार्थ करने लगा है। अतएव समाज से सविनय निवेदन है कि इस क्षेत्र और उसके अन्तर्गत चलने वाली संस्थाओं को अच्छी संख्या में सहायता प्रदान कर अपनी गाढ़ी कमाई के द्रव्य का चारों दानों में सदुपयोग कर सफल वनावें।

द्रव्य भेजने का पता— नम्र निवेदक—

फूलचन्द्र जैन वजाज कोषाध्यक्ष टीकमगढ़ (म. प्र.)

बारेलाल जैन राजवैद्य ऑनरेरी मंत्री पता—स्याद्वाद आयुर्वेदिक फार्मेसी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi